काला घोड़ा
अन्ना सेवेल के प्रसिद्ध उपन्यास

अन्ना सेवेल के प्रसिद्ध उपन्यास BLACK BEAUTY
का सरल हिन्दी रूपान्तर

मूल्य :

दूसरा संस्करण 1979, © शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली
BLACK BEAUTY (Novel), by Anna Sewell

रूपान्तरकार : सुरेश सलिल
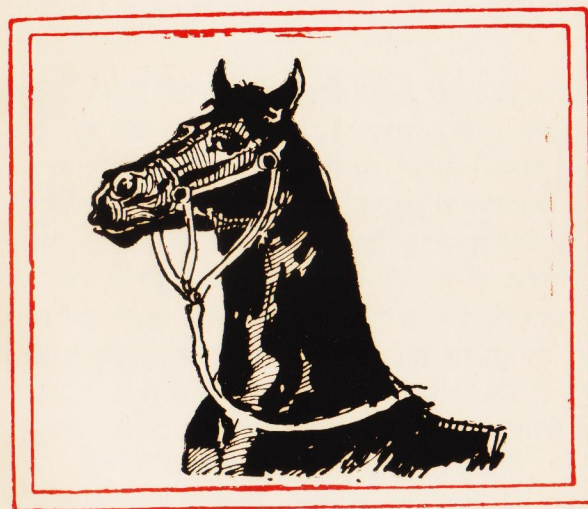
शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

काला घोड़ा

मुझे अपनी ज़िन्दगी की सबसे पहली जगह जो अच्छी तरह याद है, वह एक बड़ा-सा खूबसूरत चरागाह था। उसके बीचोंबीच साफ पानी का एक तालाब भी था, जिसके किनारे कुछ छायादार वृक्ष लगे हुए थे और बीच में नरकुल व कुमदिनी की बेले थीं। अपने बचपन में, जब मैं घास नहीं खा पाता था तो मां का दूध पीकर ही रहता था। उन दिनों दिन में मैं अपनी मां के साथ भागता रहता और रात में उसीसे सटकर सो जाता। जब गर्मी और धूप से हम परेशान होते तो हम तालाब के किनारे वृक्षों की छाया में चले जाते। जाड़े के दिनों में ठंड से बचने के लिए हमारे पास एक खूबसूरत और आरामदेह घुड़साल थी।

जैसे ही मैं बड़ा हुआ और घास खाने लगा, मेरी मां दिन में काम पर जाने लगी। वहां से वह शाम को वापस आती। चरागाह में मेरे अलावा छः छोटे बछेड़े और थे। वे उम्र में मुझसे बड़े थे। कुछ तो इतने बड़े थे जैसे बड़े घोड़े। ज्यादातर मैं उन्हीं सबके साथ दौड़ता रहता था और बहुत प्रसन्न रहता था। मैदान में हम जितना भी दौड़ सकते, इधर से उधर दौड़ते रहते। कभी-कभी हम लोगों के बीच कुछ देहाती किस्म के खेल भी होने लगते, जैसे दुलत्ती मारना, एक-दूसरे को काटने दौड़ना आदि।

एक बार की बात है । हम लोग आपस में खूब दुलत्तियां झाड़ रहे थे । तभी मेरी मां की नज़र हमपर पड़ गई । मां ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, "मेरी बात ध्यान से सुनो ! जिन बछेड़ों के साथ तुम खेलते हो वे वैसे तो बड़े अच्छे बछेड़े हैं लेकिन हैं पूरे देहाती ! उन्हें रहन-सहन के अच्छे तरीके नहीं सिखाए गए हैं जबकि तुम एक बड़े घराने के हो और तुम्हारे बाप-दादों ने बड़ा नाम कमाया है । तुम्हारे दादा ने दौड़ में लगातार दो साल तक इनाम जीते थे । मुझे भी तुमने कभी इस तरह के भद्दे खेल खेलते नहीं देखा होगा । मझे उम्मीद है कि आगे से तुम इस तरह के बछेड़ों से दूर रहोगे और बड़े होकर अपने पुरखों की तरह ही नाम रोशन करोगे ।"

अपनी मां की वे बातें मैं कभी नहीं भूल सका । मैं जानता था कि वह बड़ी समझदार है और हमारा मालिक उसका बड़ा ध्यान रखता है । वैसे तो मेरी मां का नाम 'डचेस' था लेकिन मालिक ज्यादातर उसे 'पैट' कहकर पुकारता था । हमारा मालिक एक अच्छा और दयालु आदमी था । वह हमें खाने को हमेशा अच्छा चारा-दाना देता था और हमारे रहने के लिए उसने अच्छी जगह बना रक्खी थी । वह हमसे इतने प्यार से बातें करता था मानो अपने सगे बच्चों से ही कर रहा हो । हम सब उसे खूब चाहते थे । मां तो उसे बेहद प्यार करती थी । जैसे ही हमारा मालिक फाटक के पास आता, मां खुशी से हिनहिना उठती और दौड़कर उसके पास चली जाती । वह उसे प्यार से थपथपाता और कहता, "कहो पैट, तुम्हारा डार्की कैसा है ?" मेरा रंग कुछ-कुछ हल्का काला था । इसलिए वह मुझे 'डार्की' कहता था । इसके बाद वह मुझे अपने हाथों से बड़ी स्वादु रोटी का टुकड़ा खिलाता । कभी-कभी वह मां के लिए एकाध गाजर भी ले आता । हालांकि वैसे तो सारे के सारे घोड़े उसके पास आते थे, लेकिन हमें वह बहुत चाहता था । जिस दिन कस्बे का बाज़ार लगता उस दिन मेरी मां ही उसे बाज़ार

ले जाती ।

कभी-कभी हमारे चरागाह में डिक नाम का एक देहाती लड़का भी आता था । वह पेड़ों से बेर तोड़-तोड़कर खाता रहता और खा चुकने के बाद बछेड़ों को छेड़ता । उसे बछेड़ों की दौड़ अच्छी लगती थी । इसलिए वह उन्हें छड़ी और पत्थर मारकर दौड़ने को मजबूर करता । उसकी इन बातों की ओर हम ज्यादा ध्यान नहीं देते थे, क्योंकि दौड़ना हमें खुद अच्छा लगता था । लेकिन अगर किसी दिन पत्थर से हमें चोट लग जाती तो ?

एक दिन हमारे मालिक ने डिक की हरकतों को देख लिया । वह दौड़कर आया और डिक को कंधों से झकझोरते हुए बोला, "नालायक कहीं के ! हमारे बछेड़ों को फिज़ूल दौड़ाता है ! अगर फिर कभी तुझको ऐसी हरकत करते देख लिया तो तेरी खैर नहीं ! जा, भाग जा यहां से ! आइन्दा यहां कभी नहीं

फटकना ।''

इसके बाद हमें डिक फिर कभी नहीं दिखाई दिया। घोड़ों का साईस एक बुड्ढा आदमी था, उसका नाम डेनियल था। वह हमारे मालिक की ही तरह एक सीधा आदमी था, इसलिए हम लोगों को कोई तकलीफ नहीं हुई।

2

मैं अभी पूरे दो साल का भी नहीं हो पाया था कि तभी एक ऐसी घटना घटी जिसे मैं कभी भी न भुला सका। बसन्त ऋतु की शुरुआत के दिन थे। मैं अपने कई बछेड़े साथियों के साथ मैदान के निचले हिस्से में घास चर रहा था। तभी हमें कुछ दूरी पर कुत्तों के भौंकने की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। उन आवाज़ों से सबसे पहले वड़ा बछेड़ा चौकन्ना हुआ। उसने अपना सिर ऊपर उठाया, कान खड़े किए और कहा, ''यह शिकारी कुत्तों की आवाज़ है।'' यह सुनते ही हम सब मैदान के ऊपरी हिस्से की ओर दौड़ पड़े। वहां हमारे मालिक के एक बूढ़े घोड़े के साथ मेरी मां भी खड़ी थी।

कुछ ही पल वीते होंगे कि मेरी मां ने वताया, ''एक खरगोश उन कुत्तों को दिखाई दे गया है। वे उसके पीछे ही हाथ धोकर पड़ गए हैं। अगर वे इस तरफ आए तो हम उन्हें शिकार करते हुए भी देख सकेंगे।''

थोड़ी ही देर बाद कुत्तों ने गेहूं के एक खेत को रोंदना शुरू कर दिया। उनके पीछे-पीछे काफी तेज़ी से दौड़ते हुए बहुत-से घुड़सवार भी थे। इतने में मैंने देखा कि एक घवराया हुआ खरगोश तेज़ी से भागता हुआ जंगल की ओर जा रहा है। उसके पीछे शिकारी कुत्ते दौड़ रहे थे। और सवसे पीछे थे छलांगें भरते हुए घुड़सवार शिकारी। खरगोश ने वड़ी कोशिश की कि बाड़ के नीचे से निकल भागे, लेकिन वह निकल न सका।

इतने में ही शिकारी कुत्तों ने उसे आ दबोचा। बस एक चीख के साथ खरगोश का काम तमाम हो गया। खरगोश का मरना था कि एक शिकारी आगे आया। अपने हन्टर से उसने कुत्तों को दूर भगा दिया। तब उसने मरे हुए खरगोश की एक टांग पकड़कर उसे ऊपर उठा लिया। यह देखकर दूसरे शिकारियों के चेहरे भी खुशी से चमक उठे।

यह सब देखकर मैं भौंचक्का-सा रह गया। जब मैंने दुबारा उस ओर नज़र दौड़ाई तो मुझे एक बड़ा दर्दनाक दृश्य दिखाई दिया। दौड़ते-दौड़ते दो खूबसूरत घोड़े गिर गए थे, जिनमें एक तो पानी से निकलने की कोशिश कर रहा था और दूसरा घास पर पड़ा हुआ कराह रहा था। एक घुड़सवार बेहोश पड़ा था और दूसरा कीचड़ से सना हुआ पानी से बाहर आ रहा था।

यह सब देखकर मेरी मां काफी गम्भीर हो गई थी। उसने कहा, "मेरी समझ में नहीं आता कि इन लोगों को शिकार खेलने में क्या मज़ा मिलता है? सिर्फ एक खरगोश या लोमड़ी या हिरन के लिए वे चोटें खाते हैं, घोड़ों को परेशान करते हैं और खेतों को बुरी तरह रौंद डालते हैं।" एक क्षण रुककर उसने फिर कहा, "लेकिन हम लोग यह सब नहीं समझ सकते! आखिर हम हैं तो घोड़े ही!"

3

अब मैं सुन्दर लगने लगा था। मेरे शरीर के बाल काफी कोमल थे और उनका कालापन चमकदार था। मेरा एक पैर सफेद रंग का था और माथे पर सफेद रंग का एक खूबसूरत तिलक था। मेरे मालिक का कहना था कि छोटे बच्चों से बड़ों की तरह यानी बछेड़ों से घोड़ों की तरह काम नहीं लेना चाहिए। इसलिए वह मुझे तब तक बेचना नहीं चाहते थे जब तक कि मेरी उम्र चार साल की न हो जाए।

और जब मेरी उम्र चार साल की हो गई तो स्क्वेयर गार्डन नाम का एक बूढ़ा आदमी मुझे देखने आया। उसने मेरी आंखों, टांगों और मुंह को अच्छी तरह देखा-भाला। फिर उसके सामने मुझे अपनी चाल और दूसरे करतब भी दिखाने पड़े। ऐसा लगा मानो मैं उसे पसंद आ गया हूं। उसने कहा, "जब यह अच्छी तरह सध जाएगा तब और भी अच्छा दौड़ेगा।" मेरे मालिक ने कहा कि वह मुझे खुद सधाएगा। और दूसरे ही दिन से वह मुझे सधाने लगा।

सधाया जाना किसे कहते हैं—यह हर एक को मालूम नहीं है। एक घोड़े के सधाए जाने का अर्थ है कि उसे ज़ीन और लगाम पहनकर अपनी पीठ पर सवार को बैठाकर चलना आ गया है। सवार को अपनी पीठ पर बैठाकर चलने में घोड़े को सवार की इच्छा का बड़ा ध्यान रखना पड़ता है। सधाते समय ही घोड़ को गाड़ी में जुतना भी सिखाया जाता है। एक सधाया हुआ

घोड़ा यह अच्छी तरह जानता है कि उसे सवार की इच्छा के अनुसार ही अपनी चाल को तेज़ या धीमा करना है। उसे यह भी पता होता है कि न तो दूसरे घोड़ों से बात करनी चाहिए, और न ही काटना या दुलत्ती झाड़ना चाहिए यानी मनमानी बिलकुल नहीं करनी चाहिए। उसे हरदम अपने मालिक की इच्छा का ध्यान रखना चाहिए—चाहे वह कितना ही भूखा और थका हुआ क्यों न हो। सधाए जाने के बाद हर घोड़े का यह फर्ज़ हो जाता है कि वह अपने मन पर काबू रखे और जैसा मालिक कहे वैसा ही करे।

एक दिन मेरे मालिक ने रोज़ की ही तरह मुझे दो मुट्ठी जौ के दाने खाने को दिए और मेरी पीठ थपथपाते हुए काफी देर तक बातें करता रहा। उसका इस तरह से बातें करना मुझे भी बहुत अच्छा लगा। जब मालिक को इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि मैं अब भड़कूंगा नहीं, तो उसने मेरे मुंह में एक लोहे की लगाम कस दी। मैं कह नहीं सकता कि वह लगाम मुझे शुरू-शुरू में कितनी खराब लगी थी। यह बात सिर्फ वे घोड़े ही समझ सकते हैं जिनका लगाम से वास्ता पड़ता है। आप ही सोचिए कि लोहे के एक बड़े-से बेस्वाद टुकड़े को मुंह में डालने और डाले रखने पर कैसा लगता होगा! सचमुच, लगाम बड़ी ही बुरी चीज़ है! कम से कम, मेरा तो यही विचार है। लेकिन जब मुझे यह याद आया कि मेरी मां को जब कहीं बाहर जाना होता है तो उसके मुंह में भी इसी तरह लगाम कस दी जाती है, और सिर्फ मेरी मां ही क्यों, हर घोड़े के लिए यह एक ज़रूरी चीज़ है, तो फिर मैं भी अपनी तकलीफ को भूल गया।

लगाम के बाद आया पीठ पर ज़ीन-बाखर कसवाने का नम्बर! लेकिन यह उतना कष्टदायक नहीं था। बूढ़े डेनियल ने मेरे सिर को पकड़ लिया और मेरे मालिक ने आहिस्ता से मेरी पीठ पर ज़ीन-बाखर कस दी। इसके बाद उसने मेरे शरीर को 'तंग' से कस दिया। वह मेरा शरीर थपथपाते हुए मुझे

पुचकारता रहा। उसने मुझे थोड़े-से जौ के दाने और खिलाए। फिर मुझे लगाम पकड़कर थोड़ी देर टहलाया गया। इसके बाद मुझे रोज़ ही ज़ीन-बाखर कसकर थोड़ी देर तक टहलाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह मेरी आदत पड़ गई।

ऐसा करते-करते जब काफी दिन बीत गए तो एक दिन सुबह, ज़ीन-बाखर, लगाम और तंग कसकर मेरा मालिक मेरी पीठ पर सवार हुआ और मुझे चरागाह की मुलायम घास पर घुमाता रहा। यह मुझे बड़ा ही अजीब लगा। फिर भी अपनी पीठ पर अपने मालिक को बैठाकर मैं अपने-आप को बहुत ही गर्वीला अनुभव करने लगा।

अब पैरों में लोहे की नाल ठुकवाने की बारी आई। यह भी एक बहुत ही कष्टदायक काम था। अब भी जब कभी मुझे नाल ठुकवाने की याद आती है तो मेरा मन कांपकर रह जाता है। हुआ यह कि, एक दिन मेरा मालिक मुझे एक लोहार की भट्ठी पर ले गया और उससे कुछ कहा। लोहार फुर्ती से मेरे पास आया और उसने एक-एक कर मेरे चारों पैरों को अपने हाथों में लेकर मेरे खुरों को थोड़ा-थोड़ा छील दिया। खुर छिलवाने में मुझे तनिक भी तकलीफ नहीं हुई और मैं आराम से अपनी तीन टांगों पर खड़ा-खड़ा बारी-बारी खुर छिलवाता रहा। खुर छिल चुकने के बाद उस लोहार ने मेरे पैर के साइज़ की एक लोहे की नाल ली और उसे मेरे पैर में लगाकर कीलें ठोंकने लगा। इसमें मुझे बड़ी तकलीफ हुई, लेकिन मेरा कोई बस तो चल नहीं पा रहा था, क्योंकि कई लोगों ने मुझे चारों ओर कसकर पकड़ लिया था। तकलीफ सहते हुए, मैं नालें ठुकवाता रहा। नालें ठुक चुकने के बाद कुछ दिनों तक मुझे अपने पैर काफी भारी और कड़े महसूस होते रहे। लेकिन फिर मैं इसका अभ्यस्त हो गया।

अब मालिक की इच्छानुसार मेरा गाड़ी में जुतने का समय आया। गाड़ी में जुतने के लिए मुझे और भी बहुत-सी चीज़ें पहननी पड़ीं। जैसे गले में चमड़े का एक मोटा-सा पट्टा, आंखों
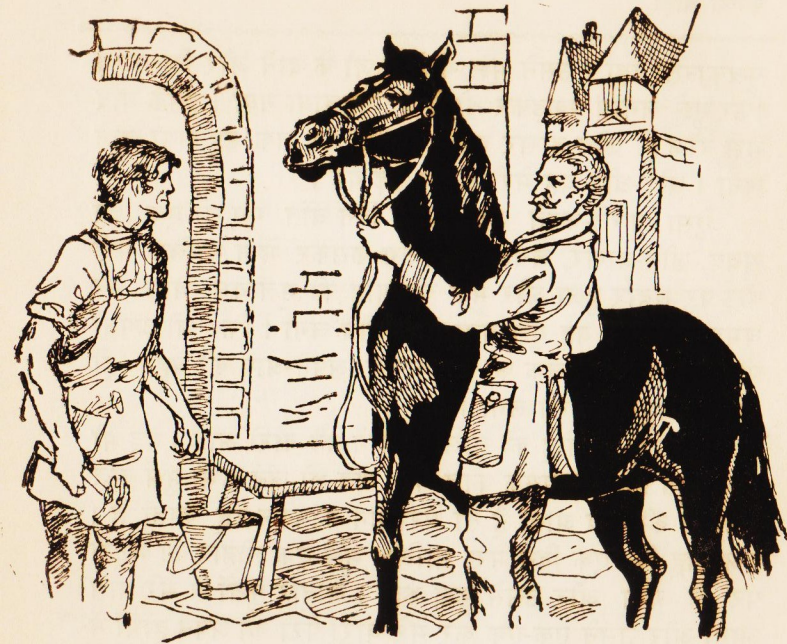
पर ब्लिकर्स, यानी चमड़े के छोटे-छोटे पर्दे, और पूंछ के नीचे चमड़े की मोटी-सी दुमची (लम्बी पट्टी)। यह दुमची भी मुझे शुरू-शुरू में उतनी ही कष्टदायक मालूम हुई जितनी कभी लगाम अनुभव हुई थी। मेरी आंखों पर ब्लिकर्स इसलिए लगाए थे ताकि किसी सवारी में जुतकर चलते समय मैं, अगल-बगल नहीं, सिर्फ आगे को ही देख सकूं, यानी मैं एक तेली का बैल बना दिया गया ! जब मेरे दुमची लगाई गई तो ऐसा जी होने लगा कि मैं 'आगाड़ी-पिछाड़ी' खिसकना शुरू कर दूं। लेकिन तभी मालिक के सीधेपन का ध्यान आ गया और मैंने इरादा बदल दिया।

मेरा मालिक प्रायः मुझे मेरी मां के साथ जोतता था क्योंकि मेरी मां का स्वभाव बड़ा ही शान्त था और वह मुझे अच्छी तरह सिखा सकती थी। मेरी मां ने ही मुझे यह बताया कि मैं

जितना अच्छा बर्ताव अपने मालिक से करूंगा उतना ही अच्छा बर्ताव मेरा मालिक मुझसे करेगा। इसलिए अच्छा यही है कि मालिक को खुश रखने के लिए कोशिश करके काम को बढ़िया ढंग से किया जाए। आगे मां ने कहा, "लेकिन आदमी भी कई तरह के होते हैं। कुछ तो हमारे मालिक के जैसे उदार और बुद्धिमान होते हैं, जिनको खुश रखने में सभी को खुशी होती है। लेकिन कुछ आदमी बड़े ही कठोर और निर्दयी होते हैं, जिन्हें किसीके भी साथ अच्छा बर्ताव करना ही नहीं आता। भगवान करे किसी घोड़े या कुत्ते को ऐसा मालिक न मिले ! इसके अलावा, कुछ लोग निहायत ही बेवकूफ, लापरवाह और घमंडी किस्म के होते हैं, जो अपने दिमाग से तनिक भी काम नहीं लेते। फल यह होता है कि उनके घोड़ों और कुत्तों की बड़ी दुर्गति होती है। मुझे उम्मीद है कि तुम अच्छे ही हाथों में जाओगे, हालांकि किसी भी घोड़े को यह नहीं मालूम होता कि वह कैसे हाथों में जा रहा है। यह भाग्य की ही बात होती है। फिर भी मेरा तुमसे यही कहना है कि जहां भी रहो अपनी कोशिश-भर डटकर मेहनत करो और खानदान का नाम रोशन करो।"

मई महीने के शुरू दिनों की बात है कि स्क्वायर गार्डन का एक आदमी आया। वह मुझे बाहर हॉल में ले गया। उस समय मेरे मालिक ने कहा, "प्यारे डार्की, तुम आज से मुझसे अलग हो रहे हो ! जाओ, तुम अच्छा घोड़ा साबित होना ! मुझे उम्मीद है कि तुम जहां भी जाओगे खूब मन लगाकर काम करोगे !" अपने मालिक से अलग होते समय मेरा मन भी बहुत भारी-भारी-सा हो गया। मेरे अन्दर से ममता उमड़ रही थी। मैं अपनी नाक मालिक के हाथ से रगड़ने लगा। मेरे ऐसा करने पर मालिक ने बड़े प्यार के साथ मेरी पीठ थपथपाई और मेरे माथे को चूमते हुए भरे हुए गले से कहा, "अच्छा विदा !"

इसके बाद मेरा वह पहला घर मुझसे छूट गया। चूंकि मुझे कुछ साल स्क्वायर गार्डन के साथ भी बिताने पड़े, इस-

लिए मुझे थोड़ा-बहुत उसके बारे में बताना चाहिए ।

स्क्वायर गार्डन का बाग बर्टविक गांव के किनारे पर था । बाग के अन्दर जाने में सबसे पहले लोहे का एक फाटक पार करना होता था, जिसके बाद ही पहला मकान पड़ता था । उस मकान के बाद पुराने और लम्बे पेड़ों के झुरमुट से होकर एक रास्ता गया था जो एक और फाटक तथा मकान तक जाता था। उसके बाद एक मकान था और कई बगीचे थे । और सबसे बाद में थे अस्तबल, बाड़े और फलों की बाड़ियां ।

मेरे अस्तबल में चार बड़े-बड़े थान थे, जिनमें पहला थान बड़ा और चौकोर था । और उसके सामने एक लकड़ी का फाटक था । बाकी और थान एक ही जैसे थे तथा बहुत बड़े नहीं थे । मेरे थान में भूसा भरने के लिए एक नीची चरही और दाने के लिए एक नांद भी थी । मेरे उस थान को 'आज़ाद कोठरी' कहा जाता था, क्योंकि पहले उसमें जिस घोड़े को रखा गया था उसे बांधा नहीं जाता था । वह उसके अन्दर अपने मन-मुताबिक बैठ-लेट-टहल सकता था । कितनी सुन्दर थी वह 'आज़ाद कोठरी' ! उसीमें मेरे साईस ने मुझे रखा । वहां सफाई थी, अच्छी हवा आती थी और मन नहीं ऊबता था । उतने सुंदर थान में शायद मैं पहले कभी नहीं रहा था । साईस ने मुझे सबसे पहले खाने को जौ के दाने दिए, मेरी पीठ थपथपाई, प्यार से पुचकारा और फिर वह चला गया ।

जब मैं अपना दाना खा चुका तो मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई । अपने बराबर के कठघरे में मुझे एक छोटी-सी भूरे रंग की घोड़ी दिखाई दी । उसकी गरदन और पूंछ के बाल काफी घने थे । उसके सिर की बनावट बहुत ही खूबसूरत थी । उसकी नाक चपटी-सी थी ।

मैंने अपने सिर को कोठरी के ऊपर लगी लोहे के सरियों तक उठाया और उससे पूछा, "कहिए, आप कैसी हैं ? क्या मैं आपका

नाम जान सकता हूं !"

वह जितना घूम सकती थी, उतना घूमकर मेरी ओर मुंह किया और कहा, "मेरा नाम मेरीलेग्स है। मैं खूबसूरत हूं ! घर की युवतियों की सवारियों के लिए मैं काम में आती हूं। कभी-कभी मैं अपने घर की मालकिन को भी सैर कराने ले जाती हूं। इसलिए मेरी मालकिन और जेम्स मेरा बड़ा ध्यान रखते हैं। क्या तुम मेरी बगल में ही रहोगे ?"

"हां !" मैंने जवाब दिया।

"चलो यह अच्छा हुआ ! अब तो आसानी से समय बीत जाया करेगा, क्योंकि तुम सुलझे हुए मिज़ाज के हो।" मेरीलेग्स ने कहा।

तभी सामने की कोठरी से एक और घोड़ी झांकी। उसके कान खड़े थे और उसकी आंखों से गुस्सा झलक रहा था। उसका रंग गहरा भूरा था, उसकी गरदन भी लम्बी और खूबसूरत थी। उसे जिंजर (अदरख) नाम से पुकारा जाता था। मेरी ओर देखकर वह बोली, "अच्छा, तो तुम्हीं ने मुझे मेरी कोठरी से बाहर निकलवाया है ! तुम्हारे जैसे बछेड़े का एक घोड़ी के साथ ऐसा सलूक ! बड़ी अजीब बात है यह !"

मैंने जिंजर से माफी मांगते हुए कहा, "आप गलत समझ रही हैं। मैंने किसीको भी बाहर नहीं निकलवाया। मुझे जो आदमी लाया था वही मुझे यहां छोड़ गया है। इसमें मेरी भला क्या गलती है ? आपने मुझे एक बछेड़ा कहा है, मैं आपको बता देना चाहता हूं कि मेरी उम्र चार साल की है और मैं पूरी तरह जवान हो गया हूं।"

दोपहर ढले जब वह चली गई तो मेरीलेग्स ने बताया कि हर किसीसे झिड़क-झिड़ककर बातें करना और चीज़ों को तोड़ना-फोड़ना इसकी आदत-सी हो गई है। इसीलिए लोगों ने इसका नाम ही जिंजर रख दिया है।

दूसरे दिन मुझे मेरे नये मालिक के सामने ले जाया गया।

वह बड़ा अच्छा घुड़सवार और घोड़ों का ध्यान रखने वाला आदमी था। मुझे देखकर उसकी पत्नी ने कहा, "कहिए, आपको कैसा लगा यह घोड़ा ?"

"बिल्कुल वैसा ही जैसा कि जॉन ने बताया था। इतना प्यारा है कि इसपर सवारी करने का मन ही नहीं होता। इसका क्या नाम ठीक रहेगा ?" मालिक बोला।

उसकी पत्नी ने कहा, "एबोनी (आबनूस) नाम कैसा रहेगा ? इसका रंग भी तो उसीकी तरह है !"

"नहीं, एबोनी अच्छा नाम नहीं है।" मेरे नये मालिक ने जवाब दिया।

"तब फिर ब्लैकबर्ड कैसा रहेगा ?"

"नहीं, यह भी नहीं।" मेरे मालिक ने यह नाम भी नापसन्द कर दिया।

तभी उसकी पत्नी ने खुशी से चहककर कहा, "अहा, एक और प्यारा-सा नाम मुझे याद आ गया। ब्लैक ब्यूटी ! कैसा प्यारा नाम है। है न !"

इस नाम को सुनकर मेरे मालिक का चेहरा भी खिल उठा। "हां, यह नाम इस खूबसूरत घोड़े पर बहुत फबेगा। तो फिर आज से हम इसे ब्लैक ब्यूटी नाम से ही पुकारा करेंगे।" उसने कहा। इस तरह मैं डार्की से 'ब्लैक ब्यूटी' हो गया।

इसके कुछ दिनों बाद मेरी जिंजर से फिर मुलाकात हुई। मुझे एक गाड़ी में उसके साथ जुतना पड़ा। लेकिन तब उसका बदला हुआ स्वभाव देखकर मुझे बड़ा अचरज हुआ। ऐसे दो-तीन मौकों के बाद जिंजर से मेरी अच्छी दोस्ती हो गई। मेरीलेग्स से पहले ही मेरी गहरी दोस्ती हो चुकी थी।

मेरे नये मालिक के पास दो घोड़े थे। उनमें एक का नाम 'जस्टिस' और दूसरे का 'सर ओलिवर' था। जस्टिस सवारी और सामान ढोने के काम आता था। सर ओलिवर को मेरा मालिक शिकार खेलने के लिए ले जाता था।

4

अपने नये ठिकाने पर मैं बेहद खुश था। मेरे आसपास के सभी लोग बहुत अच्छे थे और मेरे पास एक हवादार और खुला हुआ अस्तबल था। मुझे खाना भी सबसे अच्छा मिलता था।

इसके अलावा मुझे और चाहिए हो क्या था। लेकिन नहीं, एक चीज़ मुझे और चाहिए थी, और वह थी—आज़ादी! लेकिन उसके बारे में मैंने सोचना ही बन्द कर दिया था। शुरू के साढ़े तीन सालों में मैंने अपने हिस्से की सारी आज़ादी का उपयोग कर लिया था। अब वह समय और उम्र आ गई थी कि हफ्तों, महीनों और सालों मुझे अपने अस्तबल में ही खड़े रहना था। और ज़रूरत पड़ने पर बिना तनिक भी देर लगाए अपने मालिक की सवारी के लिए तैयार हो जाना था।

मैं यह सब शिकायत के रूप में नहीं बता रहा हूं क्योंकि मैं जानता हूं कि मुझे अब ऐसे ही रहना होगा। मेरे कहने का मतलब सिर्फ यह है कि मेरे जैसे जवान घोड़े के लिए, जिसे एक लम्बे-चौड़े मैदान में उछलने-कूदने और घास खाने की आज़ादी रही हो, अब तनिक भी आज़ादी पाना बड़ा मुश्किल होगा।

कभी-कभी, जब मेरी कसरत रोज़ से कम हो पाती और जॉन मुझे कसरत के लिए अस्तबल से बाहर ले जाता तो मेरे अंदर इतना जोश होता था कि मेरे लिए चुप और शान्त बने रहना बड़ा मुश्किल हो जाता। मेरी इच्छा होती कि मैं उछलूं-कूदूं और नाचूं। यही नहीं, मैंने शुरू-शुरू में उसे कई बार

झिझोड़ा भी, लेकिन वह कभी नाराज़ नहीं हुआ। वह हरदम मुझे पुचकारता ही रहता।

हां, गर्मियों के मौसम में कभी-कभी, किसी रविवार को मुझे दो-चार घंटों की आज़ादी मिल जाती थी। तब फलदार बगीचे या घर के अहाते में मुझे छोड़ दिया जाता और सरपट दौड़ने, लोट लगाने व हरी-हरी घास खाने की पूरी छूट मुझे मिल जाती। वह दो-चार घंटों का समय मेरी ज़िंदगी का सबसे सुखदायी समय होता क्योंकि मेरे पैरों के नीचे ठंडी और कोमल घास होती, हवा के प्यारे झकोरे मेरे बदन को छू रहे होते और सिर के ऊपर होता खुला हुआ नीला आसमान। तब बड़े-बड़े छायादार पेड़ों के नीचे खड़े होकर हम गपशप भी खूब करते।

एक दिन की बात है, एक छायादार पेड़ के नीचे जिंजर के साथ मैं अकेला खड़ा था। जिंजर से मेरी काफी लम्बी-चौड़ी बातें हो रही थीं। वह मेरे बचपन और सधाए जाने के बारे में सब कुछ जानना चाहती थी। जब मैंने उसे सब कुछ बता दिया तो वह बोली, "अगर तुम्हारी ही तरह मेरा भी लालन-पालन हुआ होता तो मेरा स्वभाव भी तुम्हारी ही तरह अच्छा होता। लेकिन मुझे ऐसा अवसर नहीं मिला। मुझे एक भी घोड़ा या आदमी ऐसा नहीं मिला जो मेरे प्रति दया का भाव रखता हो या जिसे मैं खुश कर सकूं। मेरी मां को मुझसे तभी अलग कर लिया गया, जब मैं उसका दूध पीती थी। इसके बाद मुझे बछेड़ों के झुण्ड में छोड़ दिया गया। इसके अलावा एक बात यह भी थी कि जो आदमी हमारी देखभाल करता था वह बड़ा ही गंवार था। न तो कोई मेरी फिकर करने वाला था, और न ऐसा ही कोई था जिसकी फिकर मैं करती। जब स्कूल के लड़के हमारे पास से निकलते तो वे हमारे ऊपर पत्थर फेंककर हमें दौड़ने को मजबूर करते। एक बार तो एक लड़के ने एक पत्थर इतने ज़ोर से मारा कि एक बछेड़े के मुंह पर

ही काफी गहरा घाव हो गया। तब से हमें यह विश्वास हो गया कि लड़के हमारे दुश्मन हैं।"

कुछ देर रुकने के बाद जिंजर फिर बोली, "इसके बाद मेरे सधाए जाने का समय आया। यह समय मुझे बड़ा खराब लगा। कुछ लोग मुझे पकड़ने के लिए आए। उनमें से एक ने मेरे माथे के बाल पकड़ लिए और दूसरे ने मेरी नाक इस तरह कसकर पकड़ ली कि सांस लेना दूभर हो गया। तीसरे ने मेरे जबड़े पकड़कर ज़बरदस्ती मेरा मुंह खोल दिया और उन लोगों ने मेरे मुंह में लगाम ठूंस दी। इसके बाद एक मेरी लगाम पकड़कर मुझे घसीटने लगा और दूसरा पीछे से कोड़े मारने लगा। आदमी कितना दयालु होता है, इस बात की पहली जानकारी मुझे इस रूप में हुई ! उन्होंने मुझे कभी यह भी नहीं जानने दिया कि वे चाहते क्या हैं ?

"मेरा बूढ़ा मालिक, जो मि० राइडर के नाम से मशहूर है, मुझे आसानी से ठीक कर सकता था। लेकिन उसने यह काम अपने लड़के को सौंप दिया। मालिक के लड़के का नाम सैमसन था। वह बड़ा ही ताकतवर और लम्बा-चौड़ा जवान था। उसकी आवाज़ बड़ी ही कठोर थी। उसकी आंखें भी हरदम लाल रहती थीं।

"सैमसन ने एक दिन मुझसे बहुत ज्यादा काम लिया। मैं बेहद थक गई थी, इसलिए मेरे मन में गुस्सा और दुख दोनों ही थे क्योंकि इतना काम करना तब मेरी ताकत के बाहर था। अगले दिन भी उसने मुझे बड़ी देर तक दूर-दूर तक दौड़ाया। उस दिन मेरी लगाम भी बिलकुल नई थी। इसलिए उस दिन की मेरी हरकतों से सैमसन का पारा चढ़ गया। उसने मेरे पेट में कसकर एक ठोकर लगाई। नई लगाम इतनी कष्टदायी थी कि मैं ज्यादा देर तक उसे सहन नहीं कर सकी और अपनी पिछली टांगों पर खड़ी हो गई। यह देखकर सैमसन का गुस्सा और भी बढ़ गया और उसने मेरी पीठ व पेट पर सड़ासड़

चाबुक मारना शुरू कर दिया। सैमसन के इस बर्ताव से मेरे मन में आग लग गई। मेरे लिए अपने-आपपर काबू पाना मुश्किल हो गया। काफी देर तक मेरे और सैमसन के बीच 'मुठभेड़' होती रही। अन्त में मैंने उसे अपनी पीठ पर से ऐसा उछाला कि वह दूर जाकर गिरा। मैं भी छलांग लगाती हुई मैदान से बाहर भाग गई।

"तब मेरा बूढ़ा मालिक अपने हाथ में एक छलनी लिए हुए आया और बड़े प्यार से बोला, 'मेरे पास आओ लाड़ली, मेरे पास आओ !' उसने जौ के दाने मेरे आगे कर दिए और मैं निडर होकर खाती रही ! मालिक की प्यार-भरी आवाज़ से मेरा सारा डर दूर भाग गया। मेरे शरीर के घाव और खून के धब्बे देखकर वह बहुत दुखी हुआ।

"अस्तबल के दरवाज़े पर ही उसका लड़का सैमसन खड़ा था। उसे देखते ही मैं फिर बिदकी और अपने कान खड़े कर लिए। मेरी इस हरकत से सैमसन मन ही मन कुछ बुदबुदाया। तब सैमसन से उसके बाप ने कहा, 'देखो, एक अच्छे जानवर को साध लेना तुम्हारे जैसे गुस्सेबाज़ आदमी के बस का नहीं है।'

"सधाए जाने के बाद मुझे घोड़ों के एक सौदागर के हाथ बेच दिया गया था। मैं कुछ हफ्ते ही उसके पास रह सकी। फिर उसने मुझे लन्दन के किसी फैशनपरस्त जेन्टिलमन के हाथ बेच दिया। इस तरह मैं लन्दन आ गई। उस सौदागर ने मुझे रास लगाकर भी चलाया था। रास लगाने में मुझे उतनी ही घृणा होती थी जितनी किसी भी गन्दी वस्तु से की जा सकती है। उस जगह मेरी रास को काफी कसा रखा जाता था ताकि मैं और अधिक चुस्त व खूबसूरत दिखाई दूं। रास के बारे में शायद तुम नहीं जानते होगे, लेकिन तुम्हें मैं बता सकती हूं कि यह कितनी भयानक चीज़ है। इस काम में सिर को काफी ऊंचे रखना होता है और तब तक रखना पड़ता है जब तक कि

रास ठीक तरह से 'फिट' न हो जाए । इस काम में कभी-कभी कई घण्टे भी लग जाते हैं, और इस बीच तनिक भी इधर-उधर नहीं डुला जा सकता । जब तक रास 'फिट' हो पाती है तब तक गर्दन बुरी तरह दर्द करने लगती है ।"

मैंने पूछा, "क्या तुम्हारे मालिक ने इस तरफ तनिक भी ध्यान नहीं दिया ?"

"नहीं, तनिक भी नहीं ।" उसने बताया, "उसे सिर्फ इतनी फिक्र थी कि मैं किसी तरह चुस्त और खूबसूरत दिखाई दूं । मेरा अन्दाज़ है घोड़ों के रख-रखाव के बारे में उसे कुछ भी जानकारी नहीं थी । मेरे रख-रखाव का सारा काम उसने अपने कोचवान पर छोड़ रखा था । उसने कोचवान को बता रखा था कि मैं बड़े ही बिगड़ैल स्वभाव की हूं और मुझे लगाम संभालना भी नहीं आता । अगर वह मेरे साथ नरमी का बर्ताव करता तो मैं भी यह कोशिश करती कि किसी तरह लगाम को संभालूं । मैं काम करना चाहती थी, बल्कि कठिन से कठिन काम के लिए तैयार थी । लेकिन बिना किसी कारण के वे मुझे सताते थे । और उनकी कल्पनाएं भी बड़ी विचित्र थीं, इसलिए मैं क्रुद्ध हो गई । मुझे इस तरह तंग करने का आखिर उन्हें क्या हक था ? नतीजा यह हुआ कि मैं अपना सुख-चैन खो बैठी, अपने ऊपर काबू पाना मेरे लिए संभव ही नहीं रहा । जब भी कोई मुझे जोतने के लिए आता मैं हिनहिनाना और दुलत्तियां झाड़ना शुरू कर देती । आखिर एक दिन वहां से मेरी विदाई निश्चित हो गई । मैं दोबारा बेच दी गई । और इस बार मैं यहां आ गई, जहां अब हूं । तुमसे कुछ ही पहले तो मैं यहां आई हूं ।"

जिंजर का पूरा किस्सा सुनने के बाद मुझे उसपर बड़ा रहम आया । लेकिन, जैसे ही एक के बाद एक कई सप्ताह बीतते गए, मुझे महसूस हुआ कि अब वह बड़ी ही नम्र और प्रसन्न-चित्त हो गई थी ।

5

जिंजर की और मेरी ऊंचाई इक्के में जुतने वाले घोड़ों से काफी ज्यादा थी । हम लगभग साढ़े सात हाथ ऊंचे थे, इसलिए हमें सवारी के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता था ।

जहां तक मेरी बात है, मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता उस दिन हुई जब कि मुझे एक घुड़सवार दल के लिए कसा गया । उस घुड़सवार दल में चार लोग थे—मेरा मालिक, मालकिन और दो बच्चे । मेरा मालिक जिंजर पर सवार हुआ, मालकिन ने मुझे पसंद किया और बच्चों ने सर ओलिवर और मेरीलेग्स को चुना । वह हम सबके लिए बड़ी ही प्रसन्नता का क्षण था । मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि मुझे हरदम मालकिन को ही लेकर चलना पड़ता । एक तो उसका वज़न बहुत कम था फिर उसकी आवाज़ भी बड़ी ही मीठी और कोमल थी और सबसे बढ़िया बात तो यह थी कि रास पर उसका हाथ बहुत हल्का रहता था । बिना किसी तरह का झटका दिए वह मुझे अपनी मन्शा बता देती थी ।

आह, कितना अच्छा होता, अगर लोग यह जान जाते कि रास पर हल्का हाथ रखने से घोड़ों को आराम मिलता है । सर ओलिवर को देखकर मेरे अंदर हरदम यह इच्छा होती रही है कि मैं उससे उसकी छोटी पूंछ का रहस्य पूछूं, सचमुच उसकी पूंछ छः-सात इंच से अधिक बड़ी नहीं होगी । अन्त में एक दिन मैंने उससे पूछ ही लिया, "ओलिवर साहब, यह आपकी पूंछ क्या किसी दुर्घटना में कट गई थी ?"

"नहीं जनाब," ओलिवर साहब बोले, "यह एक साहब की

क्रूरतापूर्ण, शर्मनाक और कायरतापूर्ण कार्रवाई है। जब मैं छोटा था तो मुझे एक ऐसी जगह ले जाया गया जहां यह क्रूरतापूर्ण काम होता था। वहां मुझे कसकर बांध दिया गया, और कुछ लोगों ने मुझ मज़बूती से पकड़ लिया ताकि मैं हिल-डुल न सकूं और तब उन्होंने मेरी लम्बी खूबसूरत पूंछ मांस के साथ काट ली।"

"यह तो बड़ी भयानक बात है!" मैंने भय और आश्चर्य से कहा।

"भयानक! आह! बहुत भयानक! मैं कभी भी उस घटना को भुला नहीं पाता हूं। सिर्फ पीड़ा के कारण ही नहीं, वल्कि इसलिए भी कि मेरा सबसे खूबसूरत अंग मुझसे छीनकर मेरा घोर अपमान किया गया था। उस घटना को न भूल पाने का सबसे बड़ा कारण यह भी है कि मक्खियों और डांसों को उड़ाने का मेरा हथियार सदा-सदा के लिए मुझसे छीन लिया गया था। अब मेरी पीठ और पिछली टांगों में डांस और मक्खियां अपने डंक चुभाती रहती हैं। मैं बेबस होकर उस सबको सहता रहता हूं।" सर ओलिवर ने कहा।

यह सुनकर मैंने पूछा, "लेकिन उन्होंने ऐसा क्यों किया?"

सर ओलिवर बोला, "फैशन के लिए! उन दिनों कोई भी जवान और तंदुरुस्त घोड़ा ऐसा नहीं था जिसकी पूंछ कटी हुई और छोटी न होती हो! सब फैशन की महिमा थी और अब भी फैशन की ही महिमा है। मेरे विचार से दुनिया की सबसे खराब चीज़ों में एक चीज़ फैशन भी है। फैशन के लिए ही लोग कुत्ते पालते हैं और कुत्ता हरदम सतर्क दिखाई दे इसलिए उसकी पूंछ को छोटा कर देते हैं और कानों की कोरें काट देते हैं। मैं पूछता हूं कि वे अपने बच्चों के साथ ऐसा क्यों नहीं करते, ताकि वे भी सतर्क और चुस्त दिखाई दें। आखिर उन्हें क्या अधिकार है कि वे किसी जीव को सताएं और उसे कुरूप करें!"

6

एक दिन, पतझड़ के अन्त में, मेरे मालिक को काम से सफर पर जाना था। मुझे कुत्ता-गाड़ी में जोता गया और जॉन मालिक के साथ बैठा। कुत्ता-गाड़ी मुझे हरदम अच्छी लगती रही है। वह बड़ी हल्की होती है और उसके पहिये बड़े हल्के चलते हैं। उस दिन बहुत पानी बरसा था और बाद में तेज़ हवा चलने लगी थी। इससे सड़क पर पेड़ों की सूखी पत्तियां बिछ-सी गई थीं। हम खरामा-खरामा चलते हुए चुंगी जमा करने की चौकी तक गए। उससे आगे एक लकड़ी का पुल था। नदी के किनारे कुछ ऊंचे ही थे, लेकिन पुल ऊंचा होने के बजाय आखिर तक समतल था इसलिए जब नदी उफनी हुई होती थी तो बीचोंबीच पानी पुल के तख्तों को छूने लगता था। लेकिन चूंकि पुल के दोनों ओर काफी मजबूत बाड़ें थीं, इसलिए डर की कोई बात न थी।

पुल के फाटक पर जो चौकीदार था उसने बताया कि नदी तेज़ी से बढ़ रही है। वह बहुत डरा हुआ था और कह रहा था कि आज की रात बड़ी खतरनाक होगी। कितने ही चरागाह घास में डूब गए थे और सड़क के एक निचले हिस्से में तो पानी मेरे घुटने तक था। लेकिन चूंकि काम ज़रूरी था और मेरे मालिक को हर हालत में नदी पार जाना था, इसलिए उन्होंने मुझे बहुत आहिस्ता-आहिस्ता हांकना शुरू किया।

जब हम कस्बे में पहुंच गए तो मुझे बहुत अच्छा चारा

खाने को मिला। मेरे मालिक को वहां काम के कारण बहुत देर लग गई इसलिए हम वहां से दोपहर के बहुत देर बाद ही वापसी के लिए चल सके। उस समय हवा और भी तेज़ हो गई थी। मैंने सुना कि मेरे मालिक जॉन से कह रहे थे, "इस तरह के तूफान में मैं पहले कभी घर से बाहर नहीं निकला।" यही बात मुझे भी महसूस हो रही थी। आगे एक जंगल पड़ता था। हम उसके किनारे-किनारे चले जा रहे थे। पेड़ों की बड़ी और मोटी-मोटी डालें इस तरह हिल रही थीं जैसे छोटी और पतली टहनियां हों। जंगल के बीच से आ रही तूफानी हवा की सरसराहट बड़ी ही भयानक लग रही थी।

जब हम उस जंगल से होकर गुज़रने लगे तो मालिक ने जॉन से कहा, "ईश्वर करे, हम लोग कुशलतापूर्वक जंगल पार कर लें!"

जॉन ने भी मालिक की 'हां' में 'हां' मिलाते हुए कहा, "हां, हुज़ूर! मैं भी मन ही मन यही मना रहा हूं। पेड़ इतनी ज़ोर-ज़ोर से झूम रहे हैं कि लगता है अब गिरे-तब गिरे।"

जॉन अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि अचानक बड़ी ज़ोर की चरमराने की आवाज़ आई। आवाज़ सुनकर मैं थोड़ा-सा ठिठका। अगले ही क्षण बड़ी ज़ोर की हरहराहट के साथ एक बहुत बड़ा पेड़ जड़ से उखड़कर ज़मीन पर आ पड़ा। सच, उस समय मुझे ईश्वर का बड़ा स्मरण हुआ। अगर ईश्वर की दया न होती तो एक क्षण बाद ही न जाने क्या का क्या हो जाता।

उस पेड़ के गिरने से रास्ता रुक गया। अब हमें वहां से उल्टे लौटकर एक दूसरे चक्करदार रास्ते को पकड़ना था। उस रास्ते से करीब-करीब छः मील का फर्क पड़ जाता था। लेकिन चूंकि और कोई रास्ता ही नहीं था, इसलिए हम फिर पीछे की ओर मुड़े।

नदी तक पहुंचते-पहुंचते ही काफी अंधेरा हो चुका था।
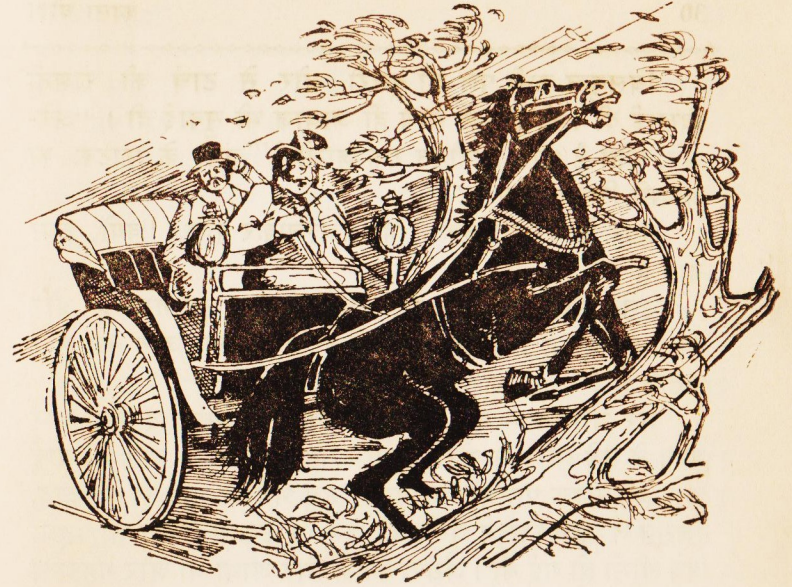
लेकिन यह मैंने फिर भी समझ लिया था कि पुल के बीच का हिस्सा पानी में डूबा हुआ है। लेकिन मेरे मालिक ने रुकना ठीक न समझा और मुझे हांकते ही रहे। मेरी चाल काफी तेज़ थी, लेकिन जैसे ही पुल के तख्तों पर मैंने पैर रखे, मुझे लगा कि आगे कोई खतरा ज़रूर है। इसलिए मैंने आगे बढ़ना ठीक न समझा। मेरे रुकते ही मालिक ने हंटर से इशारा करते हुए कहा, "अरे, रुक क्यों गए! चलो न!" लेकिन तब भी आगे बढ़ने की मेरी हिम्मत न पड़ी। तब जॉन ने कहा, "साहब, कोई न कोई बात ज़रूर है!" और वह कूदकर नीचे आ गया। उसने मेरा कन्धा सहलाया और चारों ओर नज़र डाली। इसके बाद मेरी लगाम पकड़कर वह आगे चलने लगा। लेकिन तब भी मैं अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। मेरे दिमाग में यह बात पूरी तरह बैठ चुकी थी कि आगे कोई न कोई खतरा ज़रूर है।

बिलकुल तभी पुल की दूसरी ओर से टार्च की रोशनी दिखाई दी। रोशनी के साथ ही आवाज़ भी सुनाई दी। "अरे-अरे, कौन है भाई ! फौरन रुक जाओ !" चुंगी के फाटक का आदमी चिल्ला रहा था।

इधर से मेरे मालिक ने भी चिल्लाकर पूछा, "क्यों, क्या बात है ?"

उसने चिल्लाकर बताया, "बीच में पुल टूट गया है और तख्ते बह गए हैं। अगर आगे बढ़े तो समझ लो जान का पूरा खतरा है !"

मेरे मालिक ने मन ही मन भगवान को धन्यवाद दिया और जॉन ने बड़े प्यार से मेरी लगाम पकड़कर मुझे नदी के बाईं ओर की सड़क पर मोड़ लाया। उस भयंकर तूफान के बाद, जिसने न जाने कितने वृक्षों को जड़ से उखाड़ दिया था, हवा अब धीमी हो गई थी। अंधेरा काफी घिर आया था और गहराता ही जा रहा था। मैं मद्धिम चाल से चल रहा था और सड़क भीगी होने के कारण पहियों की आवाज़ तक न सुनाई देती थी। कुछ देर तक मेरे मालिक और जॉन दोनों चुप रहे, थोड़ी देर बाद मालिक ने बड़ी गम्भीरता के साथ बोलना शुरू किया। वे कह रहे थे, "कभी-कभी जानवर आदमी की बुद्धि को भी मात दे देते हैं। आज अगर यह 'ब्लैक ब्यूटी' न होता तो हम लोगों की मौत बिल्कुल तय थी।"

अन्त में हम मालिक के घर लौट आए। मैंने देखा कि माली फाटक के पास खड़ा बड़ी बेचैनी से हमारी बाट जोह रहा था। उसने बताया कि मालकिन बड़ी घबरा रही थीं। सोचती थीं कि हे भगवान, कहीं कोई दुर्घटना न हो गई हो। इसके बाद मुझे हॉल में और ऊपर की खिड़कियों में रोशनी दिखाई दी। क्षण-भर बाद ही मालकिन भी दौड़कर आ गईं। खुशी में भर कर बोल उठीं, "अरे, तुम लोग आ गए ! भगवान बड़े दयावान हैं ! मेरी प्रार्थना उन्होंने सुन ली ! न जाने कितनी बुरी-बुरी

बातें मेरे मन में आ रही थीं ! अब, जब तुम लोग आ गए हो तो मन को चैन मिला है।"

"अरे, आज तो हम लोगों को इसने बचाया !" मालिक ने मेरी ओर इशारा करते हुए मालकिन को बताया, "आज अगर यह 'ब्लैक ब्यूटी' न होता तो सच ही हम दोनों नदी में डूब जाते।"

मालिक की बातें सुन-सुनकर मुझे मन ही मन बड़ी खुशी हो रही थी कि मैं अपने मालिक के किसी काम तो आ सका। इसके बाद जॉन मुझे अस्तबल की ओर ले चला और मालिक मालकिन के साथ घर के अन्दर चले गए।

उस रात को मुझे बहुत ही अच्छा खाना दिया गया और सोने को पयाल का नरम और गुदगुदा बिस्तर। चूंकि मैं बहुत थका था इसलिए यह चीज़ें मुझ सोने में सुहागा जैसी लगीं।

7

एक दिन मैं जॉन के साथ अपने मालिक के काम से बाहर गया हुआ था। वहां से वापस लौटते हुए रास्ते में मैंने एक अजीब दृश्य देखा। कुछ दूरी पर एक लड़का एक बछेड़े पर सवार था और उसे एक फाटक पर से कुदा रहा था। फाटक इतना ऊंचा था कि उसे कूद पाना बछेड़े के वश का नहीं था। लेकिन लड़का उसपर चाबुक चलाए जा रहा था। बछेड़े की पीठ पर जैसे ही सड़ाक् से चाबुक पड़ती वह एक ओर को मुड़कर रह जाता। लड़का बेरहमी से चाबुक चलाए जा रहा था और बछेड़ा तिल-मिलाकर इधर-उधर मुड़ता जा रहा था। असल में, फाटक को कूद पाना उसकी ताकत के बाहर की बात थी। तब लड़का बछेड़े की पीठ पर से नीचे उतर आया और पहले से भी ज्यादा बेरहमी से पिटाई करने लगा। इसके बाद लड़का फिर बछेड़े पर सवार हो गया और बछेड़े को ज़बरदस्ती कूदने के लिए मजबूर करने लगा। अब तक बछेड़ा पूरे गुस्से में आ चुका था। उसने अपने सिर को नीचे झुकाया और ज़ोर से दुलत्ती चलाई। बछेड़े का इतना करना था कि लड़का धड़ाम से कांटेदार झाड़ी में जा गिरा। बछेड़ा अपनी लगाम घसीटता हुआ तेज़ी के साथ घर की ओर भाग गया।

हम पास ही खड़े यह सब तमाशा देख रहे थे। लड़के के गिरते ही जॉन ठठाकर हंस पड़ा। "बहुत अच्छे! खूब मज़ा चखाया बच्चू को!" हंसते हुए उसने कहा।

लड़का 'आह-आह' करके कराह रहा था और झाड़ी के कांटों पर से उठने की कोशिश कर रहा था। "अरे भाई, ज़रा मुझे बाहर निकालो !" जॉन पर नज़र पड़ते ही वह चिल्लाया।

"माफ करिएगा, मैं आपकी सहायता नहीं कर सकता !" जॉन ने दूर से ही जवाब दिया, "मैं समझता हूं कि आप सही जगह पर हैं। अब तो आपको हमेशा याद रहेगा न, कि किसी बछेड़े को इतना ऊंचा फाटक नहीं कुदाना चाहिए जो उसकी ताकत से बाहर हो !" और हम दोनों आगे बढ़ चले। "देखा, कितना ज़ालिम था यह लड़का !" जॉन ने मुझसे कहा, "चलो, अब हम ज़रा इसके बाप, बुशवी किसान, के पास होते चलें। उसे ज़रा उसके लड़के की करामात तो बता दें।" यह कहकर उसने मेरी रास दाईं ओर मोड़ दी। पल-भर में ही हम बुशवी के मकान के पास आ गए। संयोग से बुशवी और उसकी बीवी फाटक के ही पास खड़े मिल गए। वे काफी घबराए हुए थे।

"क्या तुम्हें कहीं मेरा लड़का दिखाई दिया है ?" बुशवी ने जॉन से पूछा, "घण्टे-भर पहले वह काले बछेड़े पर सवार होकर कहीं गया था। बछेड़ा तो आ गया है, लेकिन लड़का नहीं आया !"

जॉन बोला, "आपका लड़का अपने किए हुए का फल भुगत रहा है !"

"क्या मतलब ?" बुशवी ने पूछा।

"आपका लड़का आपके काले बछेड़े को एक बहुत ऊंचा फाटक कुदा रहा था। बछेड़ा रह-रहकर ज़ोर लगा रहा था, लेकिन फाटक को कूद नहीं पा रहा था। आपका लड़का लगातार बछेड़े की पीठ और पेट पर कोड़े बरसाता रहा और बछेड़ा चुपचाप सब कुछ सहन करता रहा। लेकिन सहने की भी एक सीमा होती है। आपके लड़के ने वह सीमा तोड़ दी थी। इसलिए अंत में बछेड़े ने उसे नीचे फेंक दिया। वह एक झाड़ी में पड़ा कराह रहा है। हालांकि उसने मुझसे मदद मांगी थी, लेकिन मैंने

साफ इन्कार कर दिया। इसके लिए, उम्मीद है, आप मुझे माफ कर देंगे, क्योंकि मैं घोड़ों को बहुत प्यार करता हूं। और जिस किसीको भी मैं घोड़ों के साथ दुर्व्यवहार करते देखता हूं, उसके प्रति मेरे मन में कोई जगह नहीं रहती। वैसे भी, आपके लड़के को कोई खास चोट नहीं आई है, सिर्फ कुछ खरोंचें ही लगी हैं।" जॉन ने बताया।

जॉन की बातों से बुशबी की बीवी बहुत घबड़ा गई। उसने बुशबी से कहा, "चलो, जल्दी चलकर उसे देखें ! मेरे बेटे को चोट न आ गई हो।"

बुशबी ने कहा, "तुम चुप करके घर में बैठो ! फिकर करने की ज़रूरत नहीं है। उसे नसीहत मिलनी ही चाहिए। यह पहला मौका नहीं है। न जाने कितनी बार उसने ऐसी ही हरकतें की हैं। इसी तरह तो जानवर हाथ-बेहाथ हो जाते हैं।" इसके बाद उसने जॉन की ओर मुड़कर कहा, "भाई, इस खबर के लिए तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद !"

इसके बाद हम चल पड़े। जॉन रास्ते-भर हंसता-गाता रहा। घर पहुंचकर उसने यह सब कुछ जेम्स को भी बताया। जेम्स भी बड़ी देर तक हंसता रहा। बोला, "अच्छा हुआ, उसे अपने किए का नतीजा मिल गया। मैं उस लड़के को जानता हूं। जब वह स्कूल में पढ़ता था तो उसे इस बात का बड़ा घमण्ड था कि वह एक धनी किसान का लड़का है। वह अपने से छोटे लड़कों को हमेशा तंग करता रहता था। उसकी यह आदत हम बड़े लड़कों को अच्छी नहीं लगती थी। कई बार हमने उसे समझाया भी था कि स्कूल और खेल के मैदान में चाहे किसी धनी किसान का लड़का हो या किसी गरीब मज़दूर का—सब एक समान हैं। एक दिन दोपहर की छुट्टी के बाद मैंने उसे खिड़की पर बैठी मक्खियों को बेरहमी से मारते देखा। मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसकी कनपटी पर कसकर एक झापड़ रसीद किया। वह ज़मीन चाटने लगा और इतनी ज़ोर से

चिल्लाया कि दूसरे कमरों से लड़के और मास्टर साहब भी दौड़कर आ गए। फिर भी मैं दवा नहीं और उसकी हरकत का पूरा बयान मास्टर साहब से कर दिया और फर्श पर मरी पड़ी मक्खियां भी उन्हें दिखाईं।

" मास्टर साहब को गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन उन्होंने और कोई सज़ा उसे नहीं दी क्योंकि मैं पहले ही उसे काफी सज़ा दे चुका था। फिर भी मास्टर साहब ने दोपहर ढले तक उसे एक स्टूल पर बैठाए रखा और कहा कि अगले सात दिनों तक उसे खेलों में शामिल नहीं किया जाएगा। उस दिन मास्टर साहब ने हम लोगों के सामने एक व्याख्यान भी दिया। उन्होंने बताया कि जो लोग अपने से कमज़ोर लोगों को सताते हैं वे कायर और निर्दयी होते हैं। इस काम के लिए उन्हें शैतान तैनात करता है, क्योंकि शैतान का काम है लोगों को तंग करना और किसीकी जान लेना। इससे ठीक उल्टा वह आदमी होता है जो न सिर्फ आदमियों, बल्कि पशु-पक्षियों तक को प्यार करता है। ऐसे लोग भगवान के प्रतिनिधि होते हैं। उन्हींको हम पैगम्बर या देवदूत कहते हैं।"

जेम्स ने जब अपनी बात पूरी कर ली तो जॉन ने कहा, "लेकिन तुम्हारे मास्टर साहब ने सबसे अच्छी बात तो तुम्हें बताई ही नहीं कि प्यार के बिना धर्म ढोंग होता है। धर्म के बारे में लोग कितनी ही डींगें क्यों न हांकें लेकिन अगर धर्म मनुष्य जाति और जीव-जन्तुओं के प्रति एक समान दयालुता का भाव रखने की शिक्षा नहीं देता है तो बेकार है।"

8

दिसम्बर का महीना शुरू हो चुका था। एक दिन सबेरे रोज़ के अभ्यास के बाद जॉन मुझे मेरे कटघरे में ले गया और मेरी जीन के फीते कसने लगा। उधर जेम्स मेरे लिए दाना लिए आ रहा था, इतने में ही अस्तबल में मेरे मालिक आ गए। मालिक ने आते ही जॉन से जेम्स के बारे में पूछा। जेम्स जॉन की देखरेख में सईसगीरी सीख रहा था। मालिक यही पूछने आए थे कि जेम्स ठीक से काम सीख रहा है या नहीं। उन्होंने पूछा कि उसकी कोई शिकायत तो नहीं है?

"नहीं सरकार, जेम्स शिकायत का कभी कोई मौका ही नहीं आने देता। वह मेहनती, चुस्त, खुशमिज़ाज और ईमानदार लड़का है। जो वह कहता है वही करता है। इसके अलावा घोड़ों के साथ उसका व्यवहार बड़ा अच्छा है।" जॉन ने बताया।

मालिक का चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा। बड़े ही प्यार से जेम्स की ओर देखते हुए वे बोले, "प्यारे जेम्स, जॉन से तुम्हारे बारे में जो बातें मुझे मालूम हुईं, उनसे मुझे बड़ी खुशी हुई। तुमसे मुझे यही आशा थी। देखो, मेरे एक रिश्तेदार हैं—सर क्लिफोर्ड विलियम। उन्हें एक ईमानदार और चतुर सईस की जरूरत है। सर क्लिफोर्ड बड़े अच्छे आदमी हैं। अगर तुम उनके पास चले गए तो तुम्हारी ज़िंदगी सुधर जाएगी।"

इस बातचीत के कुछ ही दिनों बाद यह तय हुआ कि महीने-डेढ़ महीने बाद जेम्स सर क्लिफोर्ड के पास चला जाएगा। इस बीच उसे सारी बातों का अभ्यास करा दिया जाएगा।"

जब यह बात तय हो गई तो इसके दो या तीन दिन बाद जेम्स ने जॉन से कहा, "पता नहीं, मेरे बाद मेरी जगह पर कौन आएगा !"

"वही, जो ग्रीन नाम का लड़का है !" जॉन ने बताया।

जेम्स को बड़ा अचम्भा हुआ। वह बोला, "अरे, वह जो ग्रीन है ! वह तो अभी बहुत छोटा है !"

जॉन ने कहा, "अरे, नहीं, छोटा कहां हैं ? जानते हो, साढ़े चौहद साल का है वह !"

"लेकिन देखने में तो बहुत कम उमर का लगता है !" जेम्स ने कहा।

"हां, देखने में ज़रूर छोटा लगता है, लेकिन है बड़ा फुर्तीला और उसमें काम सीखने की लगन भी है। इसीलिए मैं मालिक की इस बात पर राजी हुआ हूं कि डेढ़ महीने में थोड़ा-बहुत वह सीख जाएगा।" जॉन ने बताया।

जेम्स—अरे डेढ़ महीने में वह बेचारा भला क्या सीख सकेगा। मेरे जैसा काम सीखने में उसे छः महीने से कम तो कतई नहीं लगेंगे। सारा काम तुम्हारे ही सिर मढ़ जाएगा।

जॉन—तो ठीक है। इसमें घबराने की क्या बात है। काम से मैं नहीं डरता। काम से मेरी बड़ी गहरी दोस्ती है।

जेम्स—सच जॉन, तुम बड़े ही नेक और दरियादिल आदमी हो। मेरी इच्छा है कि मैं भी तुम्हारे ही जैसा बनूं।

इसके बाद मालिक और मालिकन ने अपने कुछ दोस्तों के यहां जाने का कार्यक्रम बनाया। जिन दोस्तों के घर मालिकों को जाना था, वे उनके घर से लगभग 46 मील दूर थे। कोचवानी का काम जेम्स के सिपुर्द किया गया। रास्ते में रात बिताने के लिए हम लोग जिस जगह ठहरे उसका नाम था—प्रिंसिपल होटल, जो खास मार्केट में था। जैसे ही हम उस होटल के सामने पहुंचे दो सईस मुझे गाड़ी से खोलने के लिए आए। बड़ा सईस खुशदिल, चुस्त और ठिगना आदमी था, उसकी एक टांग में

हल्की-सी मोच थी। उसके कोट की धारियां पीली थीं। उसने मेरा सारा साज़ पल-भर में उतार दिया। उतना फुर्तीला सईस मुझे पहले कभी देखने को नहीं मिला। साज़ उतारने के बाद उसने मुझे थपथपाया, प्यार-भरे कुछ शब्द कहे और इसके बाद एक लम्बे-चौड़े अस्तबल में ले गया। उस अस्तबल में सात-आठ कटघरे थे जिनमें से सिर्फ दो या तीन में ही घोड़े थे बाकी सब खाली पड़े थे। छोटा वाला सईस जिंजर को लाया। अस्तबल में हम दोनों को खूब रगड़-रगड़कर साफ किया गया, अच्छा चारा दिया गया और इसके बाद फाटक बंद कर दिया गया।

मैं नहीं कह सकता कि मैं कितनी देर सोया, न मुझे यही पता था कि जब मैं जगा तब रात के कितने बजे थे। लेकिन जगने पर मुझे बहुत बेचैनी महसूस हुई। मैं झटपट उठ खड़ा हुआ। उस समय वातावरण ऐसा भारी था कि मुझे लगा मेरा दम ही घुट जाएगा। तभी मैंने सुना कि जिंजर बहुत ज़ोर-ज़ोर से खांस रही है। साथ ही हममें से एक और घोड़ा भी बड़ा परेशान-सा नज़र आ रहा था। लेकिन माजरा क्या है, यह अंधेरा होने के कारण समझ में नहीं आ रहा था। फिर भी, सांस लेने में ऐसा ज़रूर महसूस हो रहा था जैसे हमारे चारों ओर काफी धुआं भरा हुआ हो।

कठघरे की एक खिड़की खुली हुई थी। इसलिए मैंने सोचा कि शायद उधर से ही धुआं आ रहा होगा। लेकिन तभी किसी के चलने की आहट सुनाई दी। उस आहट से मैं और भी सिहर उठा। तब तक मेरे आस-पड़ोस के और भी घोड़े जाग गए थे। उनकी हरकतों से भी ऐसा लगता था कि वे काफी घबराए हुए हैं। तभी वह आहट और भी पास आ गई। एक आदमी अपने हाथ में एक लालटेन लिए हुए जल्दी-जल्दी हमारे पास आया। आते ही उसने सारे घोड़ों को खोल दिया और अस्तबल से बाहर निकालने की कोशिश करने लगा। वह इतनी जल्दबाज़ी कर रहा था और इतना डरा

हुआ था कि मैं ओर ज्यादा डर गया। उसने सभी घोड़ों को बाहर की ओर हांकना चाहा लेकिन हड़बड़ाहट के कारण एक भी घोड़ा बाहर जाने को तैयार नहीं हुआ। मेरे पास भी वह आया, लेकिन मैं भी अपनी जगह पर ही डटा रहा। तब मजबूर होकर वह खुद अस्तबल के बाहर चला गया।

इसमें कोई शक नहीं कि यह हमारी बेवकूफी थी। मगर खतरा चारों ओर दिखाई दे रहा था, इसलिए यही समझ में नहीं आ रहा कि किसपर भरोसा किया जाए। जब मैंने अपने चेहरे को ऊपर की ओर उठाया तो खिड़की के सीखचों से दीवाल के ऊपर आग की लाल-लाल लपटें दिखाई दीं। बाहर की ओर से 'आग-आग' की आवाज़ें भी आ रही थीं। तभी एक बूढ़ा सईस झटपट और सधी हुई चाल में भीतर आया। उसने एक घोड़े को बाहर निकाला, फिर वह दूसरे घोड़े के पास गया। लेकिन बाहर से आग की लपटें रह-रहकर और तेज़ होती जा रही थी और शोरगुल भी बहुत बढ़ गया था।

उसी समय मुझे जेम्स की आवाज़ सुनाई पड़ी। उस समय भी उसकी आवाज में मुझे हरदम जैसा अपनापन और धीरज महसूस हुआ। मुझे काफी राहत मिली। हम लोगों को धीरज बंधाता हुआ वह मेरे पास आया, क्योंकि मेरा कटघरा ही सबसे पहला था। आते ही उसने मेरी पीठ थपथपाई और बाहर चलने को कहा। उसने झटपट मेरी लगाम लगाई और मेरी आंखों पर अपना अंगौछा बांधकर अस्तबल से बाहर ले चला। जब मैं सही-सलामत आंगन में आ गया तो उसने मेरी आंखें खोल दीं और चिल्लाकर कहा, "अरे, कोई है! इस घोड़े को संभालो, मैं अब दूसरों को लेने जा रहा हूं।"

एक लम्ब-तड़ंग आदमी ने आगे बढ़कर मरी रास थाम ली और जेम्स फिर तेज़ी से अस्तबल में घुस गया। यह देखकर मैं बड़े ज़ोर से हिनहिना उठा।

आंगन में बड़ा धुंधलका था। दूसरे अस्तबलों से भी घोड़ों

को निकाला जा रहा था। घरों व चौपालों से और भी बहुत-सा सामान बाहर लाया जा रहा था। लोग उसे बचाने के लिए इधर से उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। लेकिन मैं अपनी नज़र अस्तबल के दरवाज़े की ओर ही गड़ाए हुए था। वहां सिर्फ धुआं ही धुआं दिखाई दे रहा था, बीच-बीच में आग की लाल-लाल लपटों की चमक भी दीख जाती थी। तभी मुझे अपने मालिक की आवाज सुनाई दी। वे कह रहे थे, "जेम्स हॉवर्ड, तुम कहां हो?" लेकिन उन्हें कोई भी जवाब नहीं मिला। तभी मुझ, अस्तबल के अंदर किसी चीज़ के टूटने की चरचराहट सुनाई दी। अगले ही क्षण मैंने देखा कि धुएं को चीरता हुआ जेम्स जिंजर को लिए आ रहा है। उस दृश्य को देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैं बहुत ही प्रसन्न होकर हिनहिना उठा।

धुएं के कारण उन दोनों की हालत खराब थी। जिंजर रह-रहकर खांस रही थी और जॉन के मुंह से आवाज़ तक नहीं निकल पा रही थी।

मेरे मालिक ने आगे बढ़कर उसकी पीठ ठोंकी और कहा, "वाह मेरे शेर! कहो, कहीं चोट तो नहीं लगी!" जेम्स ने सिर हिलाकर बताया कि 'नहीं'। धुएं के कारण वह तब तक नहीं बोल पाया था। जब उसकी हालत कुछ ठीक हुई तो हम बाज़ार के बीच में आ गए थे।

इस घटना के बाद हमारा आने का सफर बड़ा ही आसान रहा। सूरज डूबने के कुछ ही देर बाद हम अपने मालिक के दोस्त के घर पहुंच गए। वहां हमें एक साफ और हवादार अस्तबल में रखा गया। वहां एक सईस बड़ा ही दयालु था। उसने हमारे आराम का पूरा ध्यान रखा।

वहां हम दो-तीन दिन रुके। इसके बाद फिर अपने घर लौट आए। अपने घर में अपना अस्तबल और अपने प्यारे सईस जॉन को देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। जॉन भी हम सबको देखकर बहुत ही खुश हुआ।

9

जो ग्रीन भी जेम्स की ही भांति बड़ा बुद्धिमान निकला। उसने सारा काम बड़ी जल्दी सीख लिया। अपने काम के बारे में वह इतना चुस्त और भरोसे वाला था कि जॉन भी कई मामलों में उसपर बड़ा विश्वास करने लगा।

एक दिन की बात है, जॉन गाड़ी लेकर कहीं बाहर गया हुआ था और मालिक को अपने एक दोस्त के पास कोई खबर भेजनी थी। उसका मकान तीन मील दूर था। इसलिए उन्होंने जो को हुक्म दिया कि वह मुझपर सवार होकर उनके दोस्त के पास खबर दे आए। उन्होंने उसे यह भी हिदायत दी कि घोड़े पर लापरवाही से न चढ़े।

जब हम खबर देकर वापस लौट रहे थे तो ईंटों के भट्ठे के पास हमने एक बड़ा ही दर्दनाक दृश्य देखा। वहां एक गाड़ी के पहिए कीचड़ में फंसे हुए थे। उस गाड़ी में दो घोड़े जुते हुए थे और उसपर अनगिनत ईंटें लदी हुई थीं। घोड़े रह-रहकर ज़ोर लगाते थे, लेकिन गाड़ी पर बहुत ज्यादा बोझ था, इसलिए पहिए कीचड़ से बाहर नहीं आ पा रहे थे। उधर गाड़ीवान बड़ी ही बेरहमी के साथ घोड़ों के ऊपर कोड़े बरसाए जा रहा था। उस दृश्य को जब जो ने देखा तो उसने मेरी लगाम खींची और मैं रुक गया।

कितने दुःख की बात थी कि दो घोड़े अपनी पूरी ताकत लगाकर गाड़ी को कीचड़ से बाहर लाने की कोशिश कर रहे

थे, लेकिन गाड़ी टस से मस नहीं हो रही थी। वे इतना ज़ोर लगा रहे थे कि उनकी टांगी और गर्दन से पसीने की धार बह रही थी और पेशियां तनी हुई थीं। फिर भी वह अत्याचारी गाड़ीवान उन गूंगे जीवों पर रहम नहीं कर रहा था और साड़-साड़ कोड़े बरसाए जा रहा था।

जो यह देखकर ज़ोर से चीखा, "रुक जाओ! इस तरह घोड़ों को मारना ठीक नहीं। पहिए कीचड़ में इतनी बुरी तरह फंसे हैं कि गाड़ी को खींच पाना इन बेचारे घोड़ों के वश की बात नहीं।"

लेकिन गाड़ीवान पर जो की बात का कोई भी असर नहीं हुआ। वह पहले की ही तरह कोड़े सटकारता रहा।

तब जो फिर बोला, "घोड़ों को मत मारो! गाड़ी से नीचे उतरो! मैं भी तुम्हारी मदद कर दूंगा। दो आदमियों के धक्के देने से पहिये आसानी से कीचड़ से बाहर हो जाएंगे।"

जो की बात का जवाब देते हुए उस गाड़ीवान ने बड़ी ही झुंझलाहट के साथ कहा, "अबे तू जा, अपना काम कर! मुझे अच्छी तरह मालूम है कि मुझे क्या करना चाहिए।" गाड़ीवान का यह जवाब सिर्फ जो को ही नहीं मुझ भी बहुत बुरा लगा। इसके बाद वह फिर घोड़ों पर कोड़े बरसाने लगा।

यह देखकर जो ने मेरी रास खींची। जैसे ही मुझे संकेत मिला, मैंने अपनी गर्दन मोड़ ली और हम तेज़ चाल से ईंटों के भट्ठे के मालिक के घर की ओर चल पड़े।

जो ने भट्ठे के मालिक को कोचवान का सारा किस्सा बताया और कहा कि वह वहां जाकर उस निर्दयी कोचवान से उन घोड़ों को बचा ले। भट्ठे का मालिक जो की बात से बड़ा प्रसन्न हुआ और जो को बहुत-बहुत धन्यवाद देने के बाद बोला, "अगर मैं उस निर्दयी कोचवान का केस अदालत में ले जाऊं तो क्या तुम गवाही दे सकोगे?"

"जी हां, मैं अवश्य गवाही दूंगा।" जो ने तपाक से उत्तर

दिया। इसके बाद हम लोग अपने घर वापस आ गए। अभी मुश्किल से एक ही हफ्ता बीता होगा कि जो ने बड़े गर्व के साथ जॉन को बताया कि उस गाड़ीवान को घोड़ों के साथ दुर्व्यवहार करने के अपराध में तीन महीने की सज़ा हो गई है!" सुनकर जॉन ने पूछा, "तो तुम्हें इसकी खुशी क्यों हो रही है?"

"इसलिए कि मेहनती और भोले-भाले घोड़ों के साथ दुर्व्यवहार करने की सज़ा उसे मिल गई। सिर्फ उसीकी बात नहीं किसी भी ऐसे आदमी को, जो जानवरों के साथ बुरा बर्ताव करता हो मैं यही सज़ा दिलाना चाहूंगा। जॉन भइया, जानवरों के साथ बुरा बर्ताव होते मैं कतई सहन नहीं कर सकता!" जो ने कहा।

सुनकर जॉन बड़ा खुश हुआ। उसने इस घटना का ज़िक्र मालिक से भी किया। उन्होंने भी जो की पीठ थपथपाकर शाबाशी दी और कहा, "सच जो, आज मुझे विश्वास हो गया कि तेरी देख-रेख में मेरे घोड़े सुखी रह सकेंगे।"

10

इस आरामदायक जगह में रहते हुए मुझे तीन वर्ष हो चुके थे। अब हमें दुःख-भरे दिनों का सामना करना था। समय-समय पर हमें अपनी मालकिन के बीमार होने की बात मालूम होती रहती थी। डाक्टर प्रायः रोज़ ही घर आता रहता था। हमारे मालिक काफी उदास और चिंतित दिखाई देते। फिर हमें पता चला कि मालकिन यह घर छोड़कर बाहर जा रही हैं। डाक्टर ने राय दी थी कि उन्हें अपनी बीमारी ठीक करने के लिए दो या तीन साल किसी गर्म स्थान में जाकर रहना होगा। इस खबर को सुनते ही सारे घर में मनहूसी जैसी छा गई। हर आदमी दुखी हो उठा। लेकिन मेरे मालिक बड़े ही शान्त मन से घर के सारे सामान को बंधवाने में व्यस्त हो गए। उन्होंने, यह लगभग तय कर लिया था कि अब इंग्लैंड छोड़ देना पड़ेगा। घर के भीतर की यह चहल-पहल और इंग्लैंड छोड़ने की बातचीत इतनी तेज़ी से और इतनी ज़ोर-ज़ोर से हो रही थी कि अस्तबल में मुझे भी इस सबका पता चल गया। जैसे ही मालिक और मालकिन के इंग्लैंड छोड़ने की बात मालूम हुई मेरी आंखों के आगे अंधेरा-सा छा गया और मन में यह बात पक्की हो गई कि अब गर्दिश के दिन देखने का समय आ गया है। यही हालत जॉन और जो की भी थी। वे चुपचाप भरे-भरे मन से काम करने में व्यस्त थे। कुछ देर बाद जब सारा सामान बंध-बंधा गया और मालिक-मालकिन व बच्चे आदि तैयार हो गए तो जिंजर और मुझे भी काम लग जाना पड़ा।

सबसे पहले मालिक के बच्चों—जेसी और फ्लोरा तथा उनकी देखरेख करने वाली नौकरानी को जाना था। जाते समय उन्होंने हमारी ओर भरी-भरी नज़रों से देखा और बड़े मित्रभाव से मेरीलेग्स की पीठ थपथपाई। इसके बाद हमें पता चला कि मालिक ने मुझे और जिंजर को अपने एक पुराने दोस्त वारविक के एक सामंत के हाथ बेच दिया है। मेरीलेग्स को एक पादरी ने अपनी बीवी मिसेज ब्लोमफील्ड के लिए ले लिया था। मेरीलेग्स की देखभाल के लिए पादरी ने जो को भी अपने पास रख लिया। अब रह गया सिर्फ जॉन। हालांकि उसे भी कई जगह से बुलावे आए थे, लेकिन वह बड़े धीरज के साथ अपनी मनपसन्द जगह की तलाश करता रहा।

सांझ के समय घर छोड़ने से पहले मालिक अस्तबल में आए। उनकी आवाज़ से ही यह लग रहा था कि वे बहुत ही दुखी हैं। उसके बाद एक-एक कर वे हममें से हर एक के पास आए और बड़े प्यार से सबकी पीठ थपथपाने लगे। फिर जॉन की ओर मुड़कर बोले, "हां, भई तुमने क्या तय किया अपने बारे में ? मेरा ख्याल है कि अब तक जितने भी लोगों ने तुम्हें अपने पास रखना चाहा है, हर एक को तुमने 'ना' कर दिया है।"

"सर, मेरी यह इच्छा है कि मुझे किसी ऐसी जगह काम मिले, जहां मुझे बिल्कुल नये-नये बछेड़ों को सिखाने का मौका मिल सके। जाने कितने घोड़े आगे चलकर सिर्फ इसलिए बिगड़ जाते हैं कि शुरू में उन्हें अच्छी तरह ट्रेनिंग नहीं मिलतीं। इसलिए मेरी सिर्फ यही इच्छा है कि मैं एक या अधिक की जिन्दगी अच्छी बना सकूं। तभी मैं अपना जीवन सफल मानूंगा। आपका क्या सुझाव है ?" जॉन ने कहा।

मेरे मालिक बोले, "हां, तुम्हारा इरादा तो बहुत अच्छा है लेकिन मुझे अफसोस है कि इस बारे में मैं अभी तुम्हारी कोई मदद नहीं कर पाऊंगा, क्योंकि मुझे ऐसी किसी भी जगह की जानकारी नहीं है, जो तुम्हारे मन के मुताबिक हो, लेकिन अगर

तुम्हें कभी भी मेरी मदद की ज़रूरत महसूस हो तो मुझे बिना हिचक के चिट्ठी द्वारा खबर दे देना ।''

यह कहकर मालिक ने जॉन को अपना पता नोट कराया और उसकी ईमानदारी व स्वामिभक्ति के लिए उसे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। लेकिन जॉन को मालिक के ये शब्द नहीं रुचे। उसका गला भर आया, आंखें डबडबा आईं । उधर मालिक की भी यही दशा थी । उनका कण्ठ भर आया और मुंह से एक भी शब्द न बोल पाए । अन्त में दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े अस्तबल से बाहर चले गए ।

और फिर वह दिन भी आ पहुंचा जब मालिक और मालकिन को जाना था । सामान, बच्चे और नौकरानी पहले ही जा चुके थे सिर्फ मालिक और मालिकन रह गए थे । मैं और जिंजर मिलकर गाड़ी को हाल के दरवाज़े तक लाए । इधर नौकर-चाकर तकिया, बिस्तर और दूसरी छोटी-मोटी चीज़ें उठा ले आए। जब सारा ही प्रबन्ध हो गया तो मालिक अपने हाथों का सहारा देकर मालिकन को सीढ़ियों से नीचे उतार लाए और बड़ी सावधानी के साथ उन्हें गाड़ी में बैठा दिया । यह दृश्य बड़ा ही दुःखपूर्ण था । घर के नौकर चाकर तक यह देखकर अपने आंसू न रोक सके और ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगे ।

मालकिन को भली भांति गाड़ी में बैठाने के बाद जब मालिक भी बैठ गए तो भरे हुए गले से उन्होंने कहा, ''अच्छा, अब विदा। हम तुम्हें कभी न भुला पाएंगे और किसी न किसी बहाने तुम सब रोज़ याद आते रहोगे ।'' इतना कहकर उन्होंने जॉन से गाड़ी हांकने को कहा ।

धीमी चाल से कदम बढ़ाते हुए हम बाग से निकलकर गांव में पहुंचे । वहां के लोग अपने-अपने दरवाज़ों पर खड़े उन्हें विदा देते हुए कह रहे थे, ''भगवान इन्हें सुखी रखे !''

जब हम रेलवे स्टेशन पर पहुंच गए तो मालकिन को मालिक

ने गाड़ी पर से उतारा और वेटिंग रूम (प्रतीक्षालय) की ओर ले चले । जाते हुए, मालकिन ने जॉन की ओर मुंह कर अपनी मधुर आवाज़ में कहा, ''अच्छा, जॉन अब विदा ! भगवान करे तुम सदैव सुखी रहो !''

तभी मुझे खिचाव महसूस हुआ, लेकिन जॉन ने कोई उत्तर नहीं दिया । उस समय कुछ भी बोल पाना शायद उसके वश का नहीं था । जो ने जब गाड़ी का सारा सामान उतार लिया तो उसे मेरी व गाड़ी की देखभाल के लिए वहीं रोककर जॉन प्लेटफार्म पर चला गया ।

बेचारा जो ! उसके भी आंसू नहीं रुक पा रहे थे इसलिए वह उन्हें छिपाने के लिए हमारी आड़ में हो गया । शीघ्र ही धुआं उड़ाती हुई ट्रेन स्टेशन पर लगी और दो-तीन मिनट रुकने के बाद फिर आगे के लिए चल पड़ी ।

गाड़ी जाने के बाद प्लेटफार्म पर बिल्कुल सन्नाटा हो गया तो जॉन वापस आया । उसने कहा, ''अब हम उन्हें कभी नहीं देख सकेंगे···कभी नहीं ।'' इतना कहकर वह जो के साथ गाड़ी पर चढ़ गया और हम धीमी-धीमी चाल से वापस लौट पड़े । लेकिन अब हम जहां जा रहे थे वह हमारा पुराना घर नहीं था ।

11

अगली सुबह नाश्ते के बाद जो ने मेरीलेग्स को पादरी के घर ले जाने के लिए मालकिन वाली छोटी गाड़ी में जोता। जाते समय जो ने हम सबसे 'अलविदा' कहा और मेरीलेग्स पीछे हमारी ओर देखते हुए मुड़-मुड़कर हिनहिनाती रही। उसके बाद जॉन ने जिन्जर की पीठ पर ज़ीन कसी, मुझे लगाम लगाई और हमें नई जगह व नये मालिक के पास ले चला। पन्द्रह मील का सफर तय करने के बाद हम एक ऐसे बाग में पहुंचे जहां एक बहुत बड़ा मकान और कई अस्तबल थे। यहीं वारविक का सामंत रहता था। अहाते में पहुंचकर जॉन ने मि० यार्क के बारे में पूछताछ की। मि० यार्क औसत डील-डौल के बड़े ही हंसमुख आदमी थे। जॉन के साथ वे बड़े मधुर और दोस्ताना ढंग से पेश आए। उन्होंने मेरी व जिंजर की ओर भी बड़ी ही स्नेहपूर्ण नज़रों से देखा। इसके बाद उन्होंने एक सईस को बुलाकर मुझे और जिंजर को तो अस्तबल में भेज दिया और जॉन को जल-पान के लिए अपने साथ ले गए।

हमारा अस्तबल बड़ा ही हवादार था। वहां मेरे व जिंजर के रहने का स्थान अगल-बगल, पास-पास ही था। अस्तबल में पहुंचने पर हम दोनों की पहले तो खूब मालिश की गई इसके बाद बड़ी अच्छी तरह खिलाया-पिलाया गया। लगभग आधे घण्टे बाद जॉन को साथ लेकर मि० यार्क हमारे अस्तबल में आए। अब से वही मेरे कोचवान थे, लेकिन उनके मातहत रहने

का सुअवसर हमें बहुत दिनों तक नहीं मिला और आशा के विपरीत हमें जल्दी-जल्दी एक के बाद दूसरे कोचवानों के अधीन जाना पड़ा। कुछ ही दिनों बाद मि० यार्क ने भी मुझे बेच दिया। इस बार अपने नये ठिकाने पर मुझे ट्रेन से जाना था। ट्रेन का सफर मेरे लिए एक नया अनुभव था। इससे पहले ट्रेन की सवारी का मौका मुझे कभी नहीं मिला था, इसलिए मन में बड़ी घबड़ाहट थी। यही नहीं, इंजन की सीटी और निकलते धुएं को देखकर तो मेरे होश ही उड़ गए। लेकिन मेरी यह घबड़ाहट कुछ देर ही रही। जब मैं अपने डिब्बे में सवार हो गया और गाड़ी चल दी तो मेरा सारा डर दूर हो गया। मैं जल्दी ही पहले जैसी हालत में आ गया।

अब मैं जिस नई जगह में आया था वह साधारण ढंग से ठीक ही थी। हालांकि वहां मेरा अस्तबल काफी आरामदायक और हवादार नहीं था, फिर भी अपने नये मालिक की स्थिति के हिसाब से उसे संतोषजनक ही माना जाना चाहिए। उस अस्तबल में मेरे खड़े होने की जगह तख्तों की बनी थी और समतल नहीं थी। मेरी चरही इतनी ऊंची थी कि खाने के समय अपने सिर को तना हुआ रखना पड़ता था जिससे गर्दन में दर्द होने लगता था और आराम नहीं मिल पाता था। इस बात का मुझे अफसोस है कि मेरे मालिक और मेरी देखरेख करने वालों को इस बात की तनिक भी जानकारी नहीं थी कि घोड़ों को अगर आरामदायक अस्तबल और सन्तोषजनक खुराक मिल जाय तो वे कहीं अधिक मुस्तैदी के साथ अपना काम कर सकते हैं। फिर भी मुझे इस बात का संतोष है कि मेरा मालिक अपनी सामर्थ्य-भर मेरा पूरा ध्यान रखता था क्योंकि मेरे अलावा और भी बहुत-से घोड़े उसके पास थे जिन्हें वह घुड़सवारी के शौकीन लोगों और घोड़ा-गाड़ी वालों को किराये पर देता था। कभी तो हमारे सईस मालिक के आदमी ही होते और कभी वे लोग खुद, जो किराये पर हमें ले जाते थे।

अभी तक की अपनी ज़िन्दगी में मेरा वास्ता ऐसे ही लोगों से पड़ा था जो घोड़े को भली भांति चलाना जानते थे। लेकिन इस नई जगह में तो मुझे बिलकुल उल्टा अनुभव हुआ। ज्यादा-तर मुझे ऐसे हाथों में रहना पड़ा जो या तो घोड़ों को हांकने और घुड़सवारी के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे या ज़रूरत से ज्यादा लापरवाह थे। हां, कभी-कभी मेरा सामना अच्छे और समझदार घुड़सवारों से भी पड़ जाता था। ऐसी एक कहानी मुझे अभी भी याद है। उस दिन मुझे पुल्तनी स्ट्रीट के एक मकान में ले जाया गया। जैसे ही मेरे मालिक का सईस मुझे उस मकान के फाटक के अंदर ले गया, वैसे ही दो आदमी मकान में से निकलकर मेरे पास आए। उनमें से जो आदमी कुछ लम्बे कद का था वह मेरी गरदन के पास आया और बड़े प्यार से मुझे थपथपाने लगा। इसके बाद उसने मेरी लगाम और ज़ीन की देखभाल करके यह जांचा कि वे ठीक से 'फिट' हैं या नहीं। जब उसे सब कुछ सही होने का पूरा विश्वास हो गया तो उसने मेरे साथ आए आदमी को लौट जाने को कह दिया। वे दोनों स्वयं मेरी पीठ पर सवार हो गए। उस दिन मुझे भी बड़ा आराम मिला और उन दोनों को भी घुड़सवारी का पूरा मज़ा मिला। जब वे मेरी पीठ पर सवार हो गए और बड़े ही मंजे हुए ढंग से मुझे दौड़ाने लगे तो मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरी पीठ पर कोई मंजा हुआ और समझदार घुड़सवार बैठा हो, जिसे अपनी सुख-सुविधा के साथ-साथ घोड़ों के दुख-दर्द का भी ध्यान हो।

उस दिन कुछ ही घंटों में वे दोनों मुझसे इतने ज्यादा खुश और संतुष्ट हो गए कि उन्होंने मेरे मालिक के पास आकर मेरी तारीफ की और मुझे अपने एक दोस्त के लिए खरीद लेने की इच्छा ज़ाहिर की। उनकी बातें सुनकर मेरे मालिक भी इनकार नहीं कर सके और मैं फिर बेच दिया गया। अब मैं अपने नये मालिक मि० बैरी के पास आ गया।

12

मेरा नया मालिक एक अविवाहित आदमी था। वह बाथ नामक कस्बे में रहता था और ज्यादातर अपने व्यवसाय में व्यस्त रहता था। यह देखकर डाक्टर ने उसे राय दी कि वह रोज़ाना कुछ देर घोड़े की सवारी किया करे। इसीलिए मेरे इस नये मालिके ने मुझे खरीदा था। उसने अपने घर से कुछ ही फासले पर मेरे लिए किराये पर एक अस्तबल लिया और मेरी देखरेख के लिए फिल्चर नाम के एक आदमी को नियुक्त कर दिया। मेरे मालिक को घोड़ों के रख-रखाव के बारे में बहुत कम जानकारी थी, मगर तब भी मेरे प्रति मालिक का व्यवहार बहुत अच्छा रहा। मेरे रहने की जगह तो काफी आरामदायक थी ही, मालिक ने फिल्चर को यह आदेश भी दे रखा था कि मुझे खाने के लिए बहुत अच्छा और काफी दाना दिया जाए।

मेरे मालिक फिल्चर को जब यह सब समझा रहे थे तो मैं भी मौजूद था। इसीलिए मन ही मन मुझे बड़ी खुशी हुई और यह विश्वास हो गया कि अब मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी।

कुछ दिनों तक तो सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। मेरा सईस फिल्चर अपना हर काम पूरी मुस्तैदी से करता रहा—अस्तबल की सफाई, मेरा दाना-पानी और मेरी तंदुरुस्ती, सब कुछ ठीक-ठीक चलते रहे। लेकिन कुछ ही दिनों बाद मुझे लगा कि मेरे दाने की मात्रा बहुत कम हो गई है। सच तो यह है कि पहले की अपेक्षा मेरा दाना चौथाई रह गया था। दो-तीन हफ्ते

में ही मेरे शरीर में इसका असर भी दिखाई देने लगा। मेरी ताकत और उत्साह पहले की तरह नहीं रह गया था। घास की खुराक हालांकि बहुत अच्छी होती है, लेकिन उसमें ऐसी शक्ति नहीं कि बिना दाने के वह शारीरिक ताकत और उत्साह को बनाए रखे। फिर भी मैं किसीसे अपनी शिकायत नहीं कर सका, और इस प्रकार धीरे-धीरे दो महीने निकल गए। मुझे आश्चर्य इस बात का था कि मेरे मालिक भी मेरी हालत की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहे थे।

इसी तरह दिन गुज़र रहे थे कि एक दिन मुझे अपने मालिक के साथ उसके एक दोस्त के गांव जाना पड़ा। मेरे मालिक का वह दोस्त एक सज्जन किसान था। घोड़ों के बारे में भी उसकी अच्छी जानकारी थी। मेरे मालिक का स्वागत करने के बाद उसने मुझपर एक सरसरी निगाह डालते हुए कहा, "मि० बैरी, मुझे लगता है कि तुम्हारा घोड़ा अब पहले जैसा चुस्त और तेज़ नहीं रहा। यह अब बड़ा ही सुस्त और कमज़ोर-सा दिखाई देता है।"

"हां, लगता तो मुझे भी ऐसा ही है," मेरे मालिक ने जवाब देते हुए कहा, "लेकिन मेरे सईस का कहना है कि शरद ऋतु में आम तौर पर घोड़े, सुस्त और कमज़ोर हो जाते हैं।"

मालिक के उस किसान दोस्त को यह सुनकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। वह बोला, "तुम भी क्या बातें करते हो मि० बैरी! अभी तो शरद ऋतु की शुरुआत भी नहीं हुई। अगस्त का महीना ही चल रहा है। और फिर, जिस तरह का हल्का काम तुम लेते हो और जितना अच्छा चारा देते हो, उस हालत में तो इसे शरद ऋतु में भी इतना सुस्त और कमज़ोर नहीं होना चाहिए।"

उन दोनों की बातें सुन-सुनकर बार-बार मुझे यह लग रहा था कि काश, मैं उन्हें अपनी कमज़ोरी और सुस्ती का रहस्य बता पाता। बता पाता कि मुझे मेरी पूरी खुराक नहीं मिल पाती है।

असलियत यह थी कि मेरा सईस फिल्चर हर रोज़ सुबह छः बजे के आसपास अपने साथ एक छोटे-से लड़के को लेकर आता था। वह लड़का अपने हाथ में एक टोकरी लिए रहता था और मेरी रोज़की खुराक का तीन-चौथाई हिस्सा उस टोकरी में भरकर ले जाता था।

किसान मित्र के यहां से लौटने के पांच-छः दिन बाद की बात है, वह लड़का जैसे ही दाना-भरी टोकरी लेकर अस्तबल से बाहर निकला, वैसे ही एक पुलिसवाले की नज़र उसपर पड़ गई। पुलिसवाले ने उस लड़के से उस दाने के बारे में काफी पूछताछ की, लेकिन लड़का ठीक-ठीक उत्तर न दे सका। तब पुलिसवाले ने उसे और ज्यादा धमकाया, जिससे डरकर लड़के ने अपने और अपने पिता के बारे में सब कुछ बता दिया। नतीजा यह हुआ कि लड़के को तो बेगुनाह मानकर छोड़ दिया गया, लेकिन फिल्चर पकड़ा गया और उसे दो महीने की कड़ी सज़ा दी गई।

13

घोड़ों का मेला ! वाह, क्या ही मज़ेदार दृश्य होता है वहां का ! इसमें कोई संदेह नहीं कि घोड़ों के मेले का अपना अलग ही रंग होता है। दूर-दूर तक सिर्फ घोड़े ही घोड़े दिखाई देते हैं। तरह-तरह के घोड़े, देशी और विलायती घोड़े, रासी घोड़े, सरकस के घोड़े, रेस वाले घोड़े, इक्के में जुतने वाले घोड़े आदि-आदि।

मेले का ज़िक्र खास तौर पर इसलिए आया कि मेरी ज़िन्दगी का अगला पड़ाव घोड़ों का एक मेला ही है। दूसरे बहुत सारे घोड़ों की तरह एक दिन मुझे भी बेचने के लिए वहां ले जाया गया था। मैं जिधर भी नज़र दौड़ाता उधर ही घोड़े, सईस और घोड़ों के खरीदार नज़र आते। हर तरफ सौदेबाज़ी का बाज़ार गर्म था। खरीदार लोग कीमत कम करवाने के लिए अच्छे से अच्छे घोड़े में खामियां निकाल रहे थे। और बेचने वाले अपने खच्चर जैसे घोड़े के भी गुणगान किए जा रहे थे। मेरे पास भी बहुत-से आदमी आए। उन्होंने मेरे टखने, मेरी गर्दन, मेरे पुट्ठे, मेरे खुर आदि बारीकी से जांचे और मुझे कुछ कदम चलाकर भी देखा।

उन्हीं में से एक आदमी मुझे बहुत पसंद आया। मैंने सोचा कि अगर यह आदमी मुझे खरीदे तो मैं बड़ा सुखी रहूंगा। वह हंसमुख स्वभाव का था। कद उसका ठिगना था। जैसे ही उसने मेरे शरीर को छुआ, मैं समझ गया कि यह आदमी घोड़ों के

रख-रखाव के बारे में जानता है। उसने बड़े ही स्नेह-भरे लहजे में मुझे पुचकारा और बड़े प्यार से मेरे कन्धे थपथपाए। उसकी भूरी-भूरी आंखें भी मुझे बड़ी प्यारी लगीं। सेल्समैन की ओर मुखातिब होकर वह बोला, "हां भई, यह घोड़ा मुझे पसंद है। मेरा ख्याल है कि इस घोड़े ने भी मुझे पसंद किया होगा। मैं इसे चौबीस शिलिंग में खरीद सकता हूं।"

"देखिए साहब, 25 शिलिंग दे दीजिए और घोड़ा ले जाइए।" सेल्समैन ने कहा।

खरीदार बड़ी ही सधी हुई आवाज़ में बोला, "देखो, तुम्हारे कहने पर मैं दस पेंस और दे सकता हूं। 24 शिलिंग 10 पेंस से अधिक मैं न दे सकूंगा। अगर मज़ूर हो तो सौदा पक्का करो।"

"चलिए ठीक है। आप भी याद करेंगे मुझे कि इतना बढ़िया घोड़ा मैं आपको दे रहा हूं। पूरा मेला छान डालने के बाद भी ऐसा घोड़ा आप नहीं पा सकेंगे।" कहते हुए सेल्समैन ने मेरी लगाम खरीदार के हाथ में दे दी और खरीदार पैसा चुकता करने के बाद मुझे लेकर मेले से बाहर एक सराय की ओर चल पड़ा।

सराय पहुंचकर मेरे इस नये मालिक ने मुझे खूब पेट भर कर दाना खिलाया। जब तक मैं खाता रहा वह मेरे पुट्ठे थपथपाता रहा और मन ही मन कुछ बातें करता रहा। जब मैं खा चुका तो उसने मेरी पीठ पर ज़ीन-बाखर कसी, सहूलियत के साथ मेरी पीठ पर बैठा और हम दोनों लंदन जाने वाली सड़क पर चल पड़े।

संध्या होते-होते हम दोनों लंदन पहुंच गए। वहां गरीब लोगों की बस्ती के पास ही हमारे मालिक का घर था। अपने घर के दरवाज़े के पास पहुंचकर जब मेरे मालिक ने घण्टी बजाई तो पल-भर में ही दरवाज़े खुल गए और एक स्त्री बाहर आई। उसके पीछे-पीछे एक छोटी-सी लड़की और एक लड़का भी था। मुझे देखकर वे तीनों बहुत ज्यादा खुश हुए और मुझे घेरकर खड़े

हो गए।

"बड़ा प्यारा घोड़ा लाए हैं आप!" स्त्री ने कहा।

मेरे मालिक ने बड़े संतोष के साथ हामी भरी और मुझे अंदर ले चला। तभी लड़की बोली, "पापा, यह तो बड़ा ही सीधा है!"

"हां बेटी, बड़ा ही सीधा, बिलकुल तुम्हारी पूसी की तरह। ज़रा, देखो तो इसके कंधे थपथपा कर!" मालिक ने कहा।

बस फिर क्या था, उन दोनों बच्चों के कोमल-कोमल प्यारे-प्यारे हाथ मेरे बदन पर दौड़ने लगे। बता नहीं सकता कि कितना अच्छा लगा मुझे।

तभी उस स्त्री ने मेरे मालिक की ओर देखकर कहा, "बेचारा काफी दूर से चलकर आ रहा है। पहले इसे कुछ खिलाना-पिलाना चाहिए।"

"हां, पोली, इसके लिए अच्छे-से चारे की व्यवस्था करो, ताकि इस बेचारे को भी कुछ पता चले कि इसका नया मालिक घोड़ों का कितना ध्यान रखता है।" मेरे नये मालिक ने कहा।

"अरे, आप चारे की बात करते हैं! मैंने तो पहले से ही इसके लिए स्वादिष्ट दलिया पका रखा है।" कहती हुई वह स्त्री अन्दर गई और एक तसले में गरम-गरम दलिया ले आई। तब तक मैं अपने नये अस्तबल में पहुंच चुका था, जो बहुत ही खुला हुआ और आरामदेह था। दलिये का राजसी भोजन करने के बाद मैं आराम करने के लिए लेट गया और अपने सुखी भविष्य के बारे में सोचने लगा।

14

मेरे इस नये मालिक का नाम था ज़ेरमियाह बारकर, लेकिन ज्यादातर लोग उसे जेरी के नाम से पुकारते थे। पोली उसकी पत्नी का नाम था और हैरी उसका बारह वर्षीय लड़का व डॉली उसकी आठ वर्षीया लड़की थी। मेरे मालिक का पारिवारिक जीवन बहुत ही सुखी था और वे एक-दूसरे को बेहद चाहते थे।

जेरी के पास अपना एक तांगा और उसमें जोतने के लिए दो घोड़े थे। उनके अलावा एक ऊंचा-सा और सफेद रंग का घोड़ा और था जिसका नाम था—कप्तान। कप्तान अब बूढ़ा हो चुका था, लेकिन जब वह जवान रहा होगा तो अवश्य ही बड़ा शानदार रहा होगा। वैसे इस बुढ़ापे में भी, उसकी कुछ आदतें उसे जवानों से भी जवान बनाए हुए थीं जैसे सिर को ऊंचा उठाए रखने व गरदन को स्वाभिमानपूर्वक ताने रखने की आदत। वास्तव में कप्तान अच्छे स्वभाव का एक ऐसा संभ्रान्त बूढ़ा घोड़ा था जिसने सचमुच ही अच्छा खाया-पिया होगा।

कप्तान को उसके बचपन में खासतौर से इस प्रकार सधाया और सिखाया गया था कि वह आगे चलकर एक फौजी घोड़ा बन सके। उसका पहला मालिक क्रीमिया के युद्ध में जाने वाली घुड़सवार सेना का एक अधिकारी था। कप्तान ने बताया कि उसे जो कुछ भी सिखाया गया पूरे मन से उसने सीखा।

कप्तान ने यह भी बताया कि बचपन में उसका रंग गहरा भूरा था और वह काफी खूबसूरत माना जाता था। उसका लम्बा-तगड़ा और जवान मालिक उसे बहुत अधिक चाहता था, इसीलिए शुरू से ही उसने कप्तान का पूरा ध्यान रखा। कप्तान ने बताया कि वैसे तो फौजी घोड़े की ज़िन्दगी उसे बहुत मज़ेदार लगी, लेकिन देश से बाहर भेजे जाने पर जब उसे समुद्री जहाज़ पर चढ़ने के लिए विवश होना पड़ा तो उसका विचार बदल गया।

कप्तान ने समुद्री जहाज़ के अपने और भी बहुत-से अनुभव बताए। उसने कहा, "समुद्री जहाज़ का सफर मुझे बड़ा ही भयानक लगा। वैसी तकलीफ मुझे अपने जीवन में और कभी नहीं हुई। मेरे साथ और भी बहुत-से घोड़ों को बाहर ले जाया जा रहा था। हम लोग जहाज़ के अंदर उछल-कूद न मचाएं और समुद्र में फांदने की कोशिश न करें, इसलिए हमारे शरीरों को रस्सी से बुरी तरह बांध दिया गया था। हम न हिल-डुल सकते थे, न इधर-उधर गरदन ही घुमा सकते थे। हमें इतनी तंग और अंधेरी जगह में खड़ा किया गया था कि सूरज की रोशनी तक देखने के लिए हम तरसते रहे। जब कभी तेज़ हवा के कारण जहाज़ डगमगाने लगता तो हमें और भी ज्यादा परेशानी होती। काफी दिनों बाद जब यात्रा समाप्त होने पर हम ज़मीन पर उतारे गए तो हमारी जान में जान आई और मन को चैन मिला। सच कहा गया है कि जल वालों को थल रास नहीं आता और थल वालों को जल में रहना पसन्द नहीं होता।

"धरती पर उतरने और धरती को देखने से शुरू-शुरू में जो खुशी हुई वह ज्यादा दिन नहीं रही, क्योंकि जिस नई जगह में हमें ले जाया गया था, वह हमारी पिछली जगह से ज्यादा कष्टदायक थी। और फिर, वहां हमें युद्ध के मैदान में भी जूझना था।

" खैर, फिर भी मैं हिम्मत नहीं हारा। पूरे तन-मन से मैंने अपने मालिक का साथ दिया, लेकिन खूबी यह थी कि मेरे और मेरे मालिक के किसी भी अंग पर तनिक भी चोट नहीं आई। यद्यपि मैंने बहुत-से घोड़ों को तोपों और बन्दूकों का निशाना बनते और तलवारों के घाट उतरते देखा, बहुत-से घोड़ों को असह्य चोटों से तड़पते भी देखा, लेकिन न जाने क्यों मुझे अपने बारे में तनिक भी भय नहीं लगा। मेरे मालिक की उत्साहवर्द्धक आवाज़, जिससे वह अपने अधीन लड़नेवालों को हिम्मत बंधाते थे, सुनकर मुझमें भी ऐसा हौसला बढ़ता था मानो मैं और मेरे मालिक दोनों अमर होकर आए हों। अपने मालिक पर मुझे इतना दृढ़ विश्वास था कि यदि वे मुझसे मौत के मुंह में जाने को कहते तो मैं बेधड़क तैयार हो जाता।

" उस युद्ध के मैदान में मैंने बहुत-से लोगों को मरते-खपते और घायल होते देखा। मरते हुए लोगों की चीखें सुनीं तथा खून की बहती हुई नदी और लाशों के पहाड़ देखे, लेकिन मेरे मन में भय, घबराहट, और दुख कभी नहीं आया। हां, मैं अपनी ज़िन्दगी का एक मनहूस दिन कभी नहीं भूल सकूंगा। वैसा भयानक दिन ज़िन्दगी में मुझे पहले या बाद में कभी देखने को नहीं मिला।

" उस दिन की सारी बातें तो मैं नहीं बता सकूंगा, लेकिन आखिर की कुछ घटनाएं बता रहा हूं। उस दिन तक हमारी ओर के घुड़सवार जान की बाज़ी लगाकर बंदूकों और तलवारों के खेल खेलते रहे थे। तलवारों की झनझनाहट, बंदूकों और तोप के गोलों के धमाके एक पल के लिए भी शांत नहीं हुए थे। पर उस दिन पता नहीं मेरा भाग्य क्यों इतना खराब हो गया कि मेरे मालिक और उनके घुड़सवारों को लगातार मुंह की खानी पड़ रही थी। दायें-बायें और सामने हर तरफ से हमें वार झेलने पड़ रहे थे। लग रहा था कि मानो बंदूक से निकलने वाली लपटें हमें भूने बिना शांत ही नहीं होंगी। न जाने कितने

बहादुर जवान और घोड़े धराशायी होते जा रहे थे। न जाने कितने अनाथ घोड़े आंखों में आंसू-भरे घबराहट के मारे जंगल की ओर भागे चले जा रहे थे।

इसके बावजूद मेरे मालिक के चेहरे पर घबराहट का निशान तक न था। वे पहले जैसे उत्साह के साथ ही अपने बाकी बचे घुड़सवारों को दायां हाथ उठा-उठाकर शाबाशी दे रहे थे और उनकी हिम्मत बंधा रहे थे। तभी बन्दूक की एक गोली सनसनाती हुई मेरे माथे के पास से निकली और मेरे मालिक के सीने में जा लगी। मालिक के गोली का लगना था कि वह छाती भींचकर रह गया। फिर उसके मुंह से चीख तक नहीं निकली। मैंने चाहा कि अपनी चाल और तेज़ करूं, लेकिन तभी उनके दायें हाथ की तलवार छूटकर ज़मीन पर जा गिरी

और मेरी लगाम उनके बायें हाथ से छूटकर ढीली हो गई। और अगले ही क्षण मेरे बहादुर मालिक मेरी पीठ पर से लुढ़कते हुए ज़मीन पर जा गिरे।

"उसके बाद मैं अपने मालिक को फिर कभी नहीं देख पाया। मुझे यह भी पता नहीं कि उनका क्या हुआ। मेरा अनुमान है कि मेरी पीठ पर से गिरकर वहीं ज़मीन पर उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए होंगे। मुझे यह भी होश नहीं रहा कि मैं अपने दूसरे मालिक के पास कैसे पहुंचा। मेरे होश-हवास गुम हो चुके थे और शरीर से मानो पसीने की नदी बह चली थी। लेकिन इतना मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अपने उस पहले मालिक जैसा प्यार मुझे इस जीवन में फिर कभी नहीं मिल पाया और न ही मैं किसी दूसरे को उतना प्यार कर पाया। युद्ध समाप्त होते ही मैं फिर इंग्लैण्ड वापस ले आया गया। यह है युद्ध के समय की मेरी कहानी!"

एक लम्बी सांस खींचते हुए कप्तान ने अपनी कहानी खत्म की। कप्तान की कहानी सुनते हुए मैं भी न जाने कहां खो गया था। होश आने पर पता चला कि पूरे एक घण्टे तक मैं कप्तान की बातें सुनता रहा हूं। मैंने कहा, "लेकिन लोग तो युद्ध के बारे में इस तरह रस ले-लेकर बातें करते हैं मानो युद्ध कोई बहुत प्यारी चीज़ हो।"

कप्तान ने फिर लम्बी सांस भरते हुए कहा, "ओह, उन लोगों ने युद्ध देखा नहीं है न! इसमें कोई सन्देह नहीं कि जब हमारा कोई दुश्मन ही न हो, तो युद्ध बड़ी प्यारी चीज़ लगती है। लेकिन जब हज़ारों अच्छे और बहादुर योद्धा और घोड़े मारे गए हों, हज़ारों लोग अपने हाथ-पांव गंवाकर लंगड़े-लूले हो गए हों तो युद्ध प्यारी चीज़ नहीं, बल्कि बड़ी ही भयानक चीज़ लगती है।"

मैंने पूछा, "क्या तुम यह भी जानते हो कि वह युद्ध किस

बात को लेकर हुआ था?"

कप्तान बोला, "नहीं, यह बात तो हम घोड़ों की समझ से बाहर की चीज़ है, लेकिन मैंने यह अनुमान ज़रूर लगाया कि जब हमारी ओर की सेना समुद्र पार कर, लम्बा रास्ता तय करके शत्रु का मुकाबला करने गई तो निश्चय ही वह दुश्मन गलत रास्ते पर रहा होगा।"
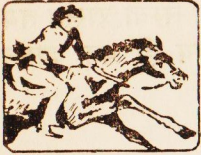
15

अगली सुबह मेरे नये मालिक की बीवी पोली और उसकी बेबी डॉली मुझे देखने और मुझसे दोस्ती करने के लिए अस्तबल में आए। पोली मेरे लिए सेब की एक फांक लाई और डॉली रोटी का टुकड़ा। उन्होंने मुझसे बड़ी मीठी-मीठी बातें भी कीं। यह सब मुझे बड़ा अच्छा लगा। तभी वहां मेरा मालिक जेरी आ गया। वह बोला, "सुनो पोली, मेरा विचार है कि इस नये घोड़े का नाम 'जैक रखा जाए, क्योंकि इस नाम का एक घोड़ा हमारे पास पहले भी था। चुस्ती और शरीर की बनावट भी इसकी उसीके जैसी है। कहो, ठीक रहेगा न ?"

"हां, बिलकुल ठीक रहेगा !" पोली ने जवाब दिया। इसके बाद वे लोग चले गए और मैं अकेला रह गया, क्योंकि कप्तान को तांगे में जोतने के लिए ले जाया गया था।

स्कूल से लौटने के बाद हैरी ने मुझे दाना-चारा खिलाकर पानी पिलाया। खा-पी चुकने के बाद अब तांगे में जुतने की मेरी बारी आई। तांगा तैयार किया गया और मुझे उसमें जोतकर तांगों के अड्डे पर लाया गया। तांगा-अड्डा गली के बाहर चौड़ी सड़क पर था, जहां और भी बहुत-से तांगे खड़े थे। सड़क के एक ओर ऊंचे-ऊंचे मकान और शानदार दुकानें थीं और दूसरी ओर एक पुराना-सा गिरजाघर। दूसरे बहुत-से तांगों की तरह मेरा तांगा भी सवारियों की इन्तज़ार में अड्डे पर खड़ा कर दिया गया।

घोड़ा-तांगा के रूप में अपनी ज़िन्दगी शुरू करते हुए मुझे पहला हफ्ता बड़ा अजीब-सा लगा। इस तरह का मेरी ज़िन्दगी में यह पहला ही अनुभव था। अपनी पहले की ज़िन्दगी में लंदन जैसे विशाल शहर की लंबी-चौड़ी, भीड़ और शोर से भरी सड़कों पर चलने का मौका करीब-करीब नहीं ही आया था। लेकिन धीरे-धीरे मैं इस सबका आदी होता गया और अपने सईस पर मेरा विश्वास भी जमता गया।

एक दिन की बात है, एक बाग के बाहर दूसरे बहुत-से तांगों के साथ खड़ा मैं सवारियों की राह देख रहा था। उस बाग में गाने-बजाने का एक कार्यक्रम चल रहा था। तभी एक पुराना और टूटा-फूटा-सा तांगा मेरे पास आया। उस तांगे में एक ऐसी घोड़ी जुती हुई थी जिसके शरीर का सारा ढांचा बिखर गया था और उसके शरीर के रोयें इस कदर झड़ चुके थे कि खाल के नीचे की एक-एक हड्डी आसानी से गिनी जा सकती थी। कुल मिलाकर उसकी हालत ऐसी थी कि किसी भी समय उसके प्राण-पखेरू उड़ सकते थे।

मैं अपने तांगे से बंधा हुआ चारा खा रहा था। इतने में हवा का एक झोंका आया और मेरे आगे का थोड़ा-सा चारा उड़कर उस घोड़ी की ओर चला गया। घोड़ी मुंह बढ़ाकर उस चारे को खा गई और फिर ललचाई नज़रों से मेरी ओर ताकने लगी। यह देखकर मेरा ध्यान फिर उस घोड़ी की ओर गया और मुझे उसपर काफी दया आई। लेकिन तभी मुझे लगा कि इस घोड़ी को मैंने पहले भी कहीं देखा है। मैं अभी उसके बारे में कुछ याद करने की कोशिश ही कर रहा था कि अचानक उसकी आवाज़ भी सुनाई दी—"अरे, ब्लैक ब्यूटी, तुम यहां कहां !" तब मुझे याद आया कि अरे, यह तो जिंजर है। लेकिन उसे देखकर मुझे मन ही मन बड़ा अफसोस हुआ—ऐसी खराब हालत हो चुकी थी उसकी। पहले की खूबसूरत जिंजर से इस दुबली-पतली, बीमार और बूढ़ी जिंजर का कोई मुकाबला ही नहीं था। उसकी

खूबसूरत भरी-भरी और चमकदार गर्दन अब बदसूरत लगने लगी थी। उसकी पुष्ट और चंचल टांगें अब सूखी लकड़ियों-सी लग रही थीं। उसके कोमल और खूबसूरत चेहरे पर, लगातार दुःख-तकलीफें सहते-सहते, अब मोटी-मोटी झुर्रियां उभर आई थीं और सांस से बदबू आने लगी थी।

चूंकि हमारे सईस दूर रेलिंग के पास बैठे आपसी बातों में मज़ा ले रहे थे, इसलिए मैं जिंजर की ओर दो-एक कदम बढ़ गया ताकि बिना किसीका ध्यान बटाए हम आपस में बातें कर सकें। जिंजर से हुई बातों के दौरान उसकी जो कहानी मुझे मालूम हुई वह बड़ी ही दर्दनाक है।

16
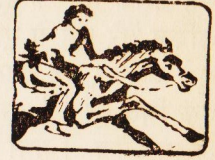
अर्लशैल में बारह महीने तक बीमार रहने के बाद जब वह ठीक हुई और काम करने के काबिल हो गई तो उसे एक भलेमानस के हाथ बेच दिया गया। शुरू में तो सब ठीक चलता रहा, लेकिन बीमारी से उठने के तत्काल बाद से ही भरपूर काम करने के कारण उसकी बीमारी फिर लौट आई। उसका दबा हुआ रोग फिर उखड़ आया। आराम और इलाज के बाद जब वह एक बार फिर ठीक हुई तो उसे बेच दिया गया। इस तरह कई-कई हाथों से होती हुई आखिर में वह एक बड़े ही खराब मालिक के पास पहुंची। उसके पास कई रेड़े और घोड़े थे जिनसे वह दिन-रात काम लेता रहता था।···और जब उसे जिंजर की बीमारी के बारे में पता चला तो वह बहुत ही निराश होकर बोला, "इस सौदे में तो मैं ठगा गया। अब लागत रकम तो तभी वापस आ सकती है जबकि इससे खूब डटकर काम लिया जाए।"

"···और ये लोग मुझसे अब डटकर दिन-रात काम ले रहे हैं।" अपने मन का सारा दर्द चेहरे पर लाते हुए जिंजर बोली।

मैं बोला, "जब ये ऐसा करते हैं तो तुम अड़ क्यों नहीं जाते ?"

"आह, एक बार ऐसा किया था," उसने कहा, "लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। आखिर आदमी हम जानवरों से ज्यादा ताकतवर तो होता ही है, और उसपर भी अगर वह कठोर और निर्दय हुआ तो हम बेसहारा लोगों के पास सहने और लगातार

सहते रहने के अलावा रास्ता ही क्या है !"

जिंजर की कहानी ने मुझे बेहद परेशान किया । मैं अपना मुंह उसके मुंह के पास ले गया ताकि उसे ढांढस बंधा सकूं, लेकिन मेरे मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल सका । फिर भी मुझे देखकर वह बेहद प्रसन्न थी । बोली, "तुम्हीं तो सिर्फ मेरे एक मित्र हो !" तभी उसका कोचवान आया और उसे मुझसे अलग खींच ले गया ।

थोड़ी ही देर बाद एक गाड़ी उधर से गुज़री जिसपर एक मरा हुआ घोड़ा लदा था । उसका सिर नीचे लटक रहा था और खुली हुई आंखें बड़ी ही भयानक लग रही थीं । मुझे लगा कि यह जिंजर है, क्योंकि मैं इस नतीजे पर पहुंच चुका था कि जिंजर को अब सारी दुःख-तकलीफों से मुक्ति सिर्फ मौत ही दिला सकती है ।

बड़े दिन और नये साल के त्योहार लोगों को खुशियों से सराबोर कर देते हैं । लेकिन गाड़ीवानों और उनके घोड़ों के लिए कभी छुट्टी नहीं होती । उन दिनों दावतों, नाच-गानों और मनोरंजन करने वाली क्लबें आदि इतनी देर तक खुली रहती हैं कि घोड़ों को रात देर तक परिश्रम करना पड़ता है । कभी-कभी तो घोड़ों और उनके कोचवानों को जाड़े या बरसात में ठिठुरते हुए घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जबकि खुशी से झूमते हुए लोग महफिलों में संगीत की धुनों के साथ नाच रहे होते हैं। शायद ही खूबसूरत औरतें कभी यह सोचती हों कि उनके कोचवान और घोड़े ठंड में ठिठुरते हुए उनकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।

मुझे ज्यादातर संध्या ढलने पर ही काम करना पड़ता था इसलिए मैं खड़े रहने का अभ्यस्त हो गया था । जेरी को भी ज्यादातर कप्तान की ही चिंता थी कि उसे कहीं ठंड न लग जाए । बड़े दिन के अवसर पर प्रायः रोज ही हमें देर तक काम करना पड़ा था इसीलिए जेरी की खांसी काफी बिगड़ गई थी ।

फिर भी हमें घर लौटने में चाहे जितनी देर हो जाती, पोली हरदम हमारी राह देखती हुई ही मिलती ।

पहली जनवरी की शाम को हमें दो व्यक्तियों को वेस्ट-एण्ड स्क्वायर के एक मकान में ले जाना था । उन्हें हमने वहां रात के नौ बजे पहुंचा दिया । उन्होंने हमसे फिर ग्यारह बजे आ जाने को कहा । वे बोले, "हो सकता है, हमें पार्टी में कुछ देर हो जाए और तुम्हें कुछ देर हमारी प्रतीक्षा करनी पड़े, लेकिन आने में देर कतई न करना ।"

हम ठीक ग्यारह बजे वहां पहुंच गए । प्रतीक्षा करते-करते बारह बज गए, लेकिन वे लोग अन्दर से तब भी नहीं निकले ।

दिन-भर बारिश होने के कारण रात में बड़ी ठंड थी और तेज़ हवा चल रही थी । उसपर भी आसपास कोई सायेदार जगह नहीं थी । जेरी ने बड़ी मुश्किल से अपना और मेरा थोड़ा-बहुत बचाव किया ।

रात को सवा एक बजे वे बाहर निकले और बिना एक भी शब्द कहे गाड़ी पर सवार हो गए । उस समय उन्होंने एक ऐसी जगह चलने को कहा जो वहां से लगभग दो मील दूर थी । उन्हें वहां पहुंचाकर ही हम अपने ठिकाने पर वापस आ पाए ।

ठंडक के कारण जेरी की खांसी इतनी तेज़ हो गई थी कि वह बोल भी नहीं पा रहा था । पोली ने बिना कुछ भी पूछे दरवाज़ा खोला और हमें रोशनी दिखाने के लिए लालटेन बाहर ले आई । "मैं भी कोई मदद कर सकती हूं ?" उसने पूछा ।

"हां, ज़रा जैक के शरीर को रगड़ दो ताकि उसे कुछ गरमी मिले और मेरे लिए काढ़ा उबाल दो ।" जेरी ने कहा ।

पोली ने मेरे खाने और सोने की ठीक-ठीक व्यवस्था करके जेरी के लिए खांसी का काढ़ा बनाने चली गई ।

अगले दिन मेरा अस्तबल कुछ देर से खुला और जेरी के बजाय हैरी अंदर आया । उसने हमारी सफाई की और हमें खाने को दिया । उसके चेहरे पर उस दिन बड़ी चुप्पी छाई थी । न

वह सीटी बजा रहा था और न ही गाना गा रहा था। बाद में मुझे पता चला कि जेरी की बीमारी ने भयानक रूप ले लिया है और डाक्टर ने भी उसके रोग को खतरनाक बताया है।

धीरे-धीरे जेरी की बीमारी ठीक होने लगी लेकिन डाक्टर ने उसे हिदायत दी कि अगर वह पूरी तरह ठीक होना चाहता है तो गाड़ी चलाने का काम बन्द कर दे। इसके बाद तय किया गया कि जेरी को ठीक होने के बाद देहात भेज दिया जाए और गाड़ी व घोड़े को बेच दिया जाए।

यह मेरे लिए बड़ा ही दुखद समाचार था, क्योंकि अपनी आगे की ज़िंदगी में मुझे कोई आकर्षण नज़र नहीं आ रहा था। और सच ही, वहां से अलग होने के बाद वैसा सुख मुझे नहीं नसीब हुआ।

17

अब मुझे एक ऐसे आदमी के हाथ बेचा गया जो अनाज का व्यापारी था और बिस्कुट व डबलरोटी बनाने का काम भी करता था। जेरी उसे जानता था इसलिए उसे उम्मीद थी कि नये मालिक के पास मुझे हर तरह का आराम मिलेगा। शुरू में तो सब ठीक-ठाक रहा, लेकिन कुछ दिनों बाद वही बेढंगी रफ्तार शुरू हो गई, जिसकी मुझे आशंका थी। मेरे उस नये मालिक के पास एक ऐसा नौकर था जो हर किसीके साथ जल्दबाज़ी मचाता था और ज़बरदस्ती का व्यवहार करता था। उसका स्वभाव था कि मेरी पीठ पर पूरा बोझ लदा होने के बावजूद वह और अधिक लादने को कहता रहता। मेरा गाड़ीवान, जिसका नाम जैक था, अक्सर मेरी पीठ पर लदे बोझ को देखकर कहा करता था कि यह बोझ इसकी ताकत से ज्यादा है। लेकिन दूसरे लोग हरदम यही कहते थे, "बार-बार चक्कर लगाने की क्या ज़रूरत, जब एक बार में ही सारा बोझ ढोया जा सकता है?"

दूसरे गाड़ीवानों की ही भांति जैक भी मेरी लगाम को हरदम कसा हुआ रखता था, जिसके कारण मुझे चलने में बड़ी तकलीफ होती थी। यही नहीं, तीन-चार महीने में ही मेरे शरीर पर उसका असर साफ-साफ दिखाई देने लगा।

एक दिन की बात है, मेरी पीठ पर ज़रूरत से ज्यादा बोझ लदा हुआ था ओर मेरा रास्ता चढ़ाई वाला था। अपनी पूरी ताकत लगा देने के बाद भी मैं चढ़ाई न चढ़ सका और मुझे रुक

जाना पड़ा। यह देखकर मेरे चालक को बड़ा गुस्सा आया और वह मेरी पीठ पर सड़ाक-सड़ाक चाबुक लगाने लगा। कोचवान के उस क्रूरतापूर्ण कृत्य को एक महिला देख रही थी। वह दौड़-कर उसके सामने आई और बड़े ही नम्र व अनुरोध-भरे स्वर में बोली, "कृपा करके अब अपने घोड़ पर कोड़े बरसाना बंद कर दीजिए। वह बेचारा अपनी कोशिश-भर पूरा ज़ोर लगा रहा है, लेकिन चढ़ाई इतनी सीधी है और बोझ इतना भारी कि उसकी सारी मेहनत बेकार जा रही है।"

यह सुनकर गाड़ीवान बोला, "लेकिन यह बोझा इसे ही तो ढोना है और इसे ही यह चढ़ाई भी पार करनी है।"

"लेकिन यह बोझ भी तो देखो, कितना भारी है !" महिला ने कहा।

"हां आपकी यह बात सही है," जैक बोला, "इससे मैं इनकार कहां करता हूं ! लेकिन यह मेरा दोष नहीं है, यह तो लादने वाले की भूल है जिसने अपने थोड़े आराम के लिए घोड़े के दुःख-दर्द का ध्यान नहीं रखा। अब मुझे तो जैसे भी हो, इसे ऊपर ले ही जाना है।"

वह मुझे फिर थोड़ा चलाने ही वाला था कि महिला ने उसे हाथ से रोकते हुए कहा, "कृपया रुक जाइए ! लाइए मैं आपकी मदद कर दूं।"

यह सुनकर गाड़ीवान को हंसी आ गई।

महिला ने कहा, "देखो, तुम घोड़े को यह मौका ही नहीं दे रहे हो कि वह बेचारा कुछ कर सके। तुमने लगाम को इतना कस रखा है कि वह बेचारा ज़ोर ही नहीं लगा पाता है। अगर तुम लगाम को ढीला कर दो तो शायद वह अपनी कोशिश में सफल हो जाए।"

चालक ने वैसा ही किया। मेरी लगाम ढीली कर दी गई। इससे मुझे आराम भी मिला औप बोझा खींचने में भी मुझे आसानी महसूस हुई। तब उस महिला ने मेरे कंधे को प्यार से

थपथपाते हुए चालक से कहा, "अब यदि तुम इससे पुचकारकर बातें करोगे तो यह निश्चय ही पहले से ज्यादा काम कर पाएगा।"

इस बार जैक ने मेरी लगाम को थामते हुए प्यार से कहा—"आओ चलें ब्लैकी !" इन शब्दों को सुनकर मेरा मन खुशी से भर गया और मैंने अपने सिर को आगे की ओर बढ़ाकर पूरा ज़ोर लगा दिया। नतीजा यह हुआ कि गाड़ी आगे बढ़ चली। कुछ चढ़ाई चढ़ने के बाद दम लेने को रुक गया। तब मुझे पता चला कि वह महिला भी हमारे पीछे-पीछे फुटपाथ पर आ रही है। वह फिर मेरे पास आई और मेरी गर्दन थपथपाते हुए बोली, "अब देखो यह ठीक ढंग से काम कर रहा है कि नहीं ? मेरा विश्वास है कि यह एक अच्छे स्वभाव का घोड़ा है और इसने अच्छे दिन भी देखे हैं। इसी तरह अगर आगे भी तुम इसे मौका देते रहोगे तो मेरा अनुमान है, यह तुम्हें निराश नहीं करेगा।"

उसके जाने के बाद जैक काफी देर तक उसके सरल और मधुर स्वभाव के बारे में सोचता रहा। मन ही मन वह बुदबुदाया, "सचमुच उसका स्वभाव तो बिलकुल देवियों जैसा था ! मुझसे वह इस तरह बातें कर रही थी, मानो किसी नौकर से नहीं, बल्कि किसी संभ्रात व्यक्ति से बातें कर रही हो। जैसे भी हो मुझे उसके सुझाव को मानना ही होगा।" अब यहां मैं अगर यह न स्वीकार करूं कि जैक ने आगे मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया तो उसके साथ अन्याय होगा।

अच्छा भोजन और पर्याप्त आराम एक व्यक्ति में ऐसी ताकत पैदा करता है कि वह अपना काम ठीक से कर सके। लेकिन शक्ति से बाहर करना अच्छे भोजन और पर्याप्त आराम के बाद भी संभव नहीं हो पाता। शक्ति से अधिक काम करने के कारण ही मेरा स्वास्थ्य दिन पर दिन खराब होता गया और फिर एक दिन मेरी जगह काम करने के लिए एक कम उम्र के घोड़े को खरीदा गया। इसी समय एक और तकलीफ भी मुझे सहनी पड़ी। वैसे अंधेरे अस्तबल के बारे में मैंने कई घोड़ों से सुन रखा था,

लेकिन तब तक इस समस्या का सामना स्वयं मुझे नहीं करना पड़ा था। वहां मेरे अस्तबल में केवल एक ही खिड़की थी जिसके कारण न तो उसमें ठीक से रोशनी ही आ पाती थी और न ही साफ हवा। इसका मेरे शरीर पर यह असर पड़ा कि मेरी नज़र काफी खराब हो गई। जब मुझे अचानक अंधेरे से रोशनी में लाया जाता तो आंखों में बड़ी तकलीफ होती। कई बार नज़र के कारण मुझे धोखा भी उठाना पड़ा और मेरे लिए ठीक से देख पाना भी मुश्किल हो गया। यह तय है कि अगर उस अस्तबल में कुछ दिन मुझे और रखा जाता तो मैं पूरा तरह अंधा हो जाता, जो मेरा सबसे बड़ा दुर्भाग्य होता।

इन्हीं सब कारणों से मुझे उस मालिक ने भी बेच दिया। इस बार मुझे एक ऐसे आदमी ने खरीदा जिसके पास बहुत-सी गाड़ियां थीं। इस नये मालिक के पास भी मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। अपनी ज़िंदगी मुझे इतनी बोझ लगने लगी कि कभी-कभी मैं जिजर की ही तरह मौत की कामना करने लगता।

एक दिन मैं चार सवारियों और बहुत-से सामान को ढो रहा था। सामान काफी भारी था और मुझे सुबह से न तो ठीक से खाना ही मिला था, न आराम ही। तब भी मैं अपनी शक्ति-भर उसे खींचता रहा। एक तो काफी भारी बोझ, ऊपर से कसी हुई लगाम और कोड़ों की मार। नतीजा यह हुआ कि मेरे पांव फिसल गया और मैं ज़मीन पर लुढ़क गया।

मुझे होश ही नहीं रहा कि वहां मैं कितनी देर पड़ा रहा। शाम को जब मुझे कुछ-कुछ होश आया तो मुझे अस्पताल ले जाया गया। घोड़ों के डाक्टर ने बताया कि इसकी यह हालत किसी रोग के कारण नहीं, बल्कि ज्यादा बोझ लादने के कारण हुई है। उसने यह भी बताया कि घोड़े को कम से कम छः महीने पूरे आराम की ज़रूरत है।

दस दिनों तक मेरी पूरी देख भाल की गई। उन दस दिनों में मुझे अच्छा दाना-चारा और पूरा आराम दिया गया। ग्यारहवें

दिन ही मेरी हालत में काफी सुधार दिखाई देने लगा। लेकिन अगले ही दिन मुझे लंदन से कुछ मील दूर बेचने के लिए ले जाया गया। वहां एक सीधा-साधा किसान अपने बेटे के साथ मुझे देखने आया और मेरे मालिक से मेरी कीमत पूछी। मेरे मालिक ने कीमत के रूप में पांच पौंड की रकम मांगी। कुछ देर सोचने के बाद उस किसान ने पांच पौंड की रकम अदा कर दी और मुझे अपने घर ले आया।

18

एक दिन सुबह एक चुस्त नवयुवक मुझे लेने आया। पहले तो मुझे देखकर वह बड़ा खुश हुआ लेकिन, जब उसने मेरी टांगें देखीं तो उदास होकर बोला, "मुझे नहीं मालूम था कि आप मेरी औरतों के लिए एक नुक्स वाला घोड़ा दे रहे हैं।"

यह सुनकर मेरे उस नये किसान मालिक ने कहा, "मेरे ऊपर विश्वास करो ! मैं तुम्हें कोई गलत चीज़ लेने को नहीं कहूंगा। और फिर, अभी तो तुम इसे सिर्फ आज़माने के लिए ले जा रहे हो ! अगर न पसन्द आए तो मुझे वापस कर जाना।"

इस तरह एक बार फिर मुझे एक नई जगह ले जाया गया। यह जगह लगभग वैसी ही थी जैसी जगह की मैं हरदम कामना करता था। वहां मेरे लिए हवादार और आरामदायक अस्तबल था, अच्छा-बढ़िया दाना-चारा था और मैं अपनी मर्जी का मालिक था। अगले दिन जब सईस मेरा मुंह साफ कर रहा था तो उसने कहा, "अरे, इसके माथे पर तो वैसा ही तिलक है जैसा ब्लैक ब्यूटी के माथे पर था ! यही नहीं, इसका कद भी वैसा ही है। कितना प्यारा था ब्लैक ब्यूटी ! पता नहीं बेचारा अब कहां होगा।"

रगड़ते-रगड़ते कुछ देर बाद उसका हाथ मेरी गरदन पर आया, जहां एक गांठ थी। गांठ को देखकर उसे और भी आश्चर्य हुआ। तब वह काफी देर तक मुझे गौर से देखता

रहा। मन ही मन वह कह रहा था, "माथे पर सफेद तिलक, गर्दन में गांठ और एक सफेद पैर···!" तभी अचानक उसकी नज़र मेरी पीठ के बीचोबीच पड़ी और उत्तेजित हो उठा, "अरे, इसकी पीठ पर तो सफेद बालों का गुच्छा भी है ! लगता है यह ब्लैक ब्यूटी ही है ! क्यों ब्लैक, तुम मुझे पहचानते हो ! मैं ही हूं तुम्हारा साथी—जो ग्रीन !" और थपथपाते-थपथपाते वह पूरी तरह विभोर हो गया।

मैं नहीं कह सकता कि मैं जो को पहचान पाया या नहीं, क्योंकि अब तो वह दाढ़ी-मूंछों वाला जवान आदमी बन चुका था और उसकी आवाज़ में भी हट्टे-कट्टे आदमियों की आवाज़ जैसा पकापन आ चुका था। लेकिन इस बात का मुझे पूरा विश्वास था कि वह मुझे जानता है और उसका नाम जो ग्रीन ही है। इसीलिए मैं बहुत खुश था। अपना मुंह उसके पास ले जाकर मैंने कहना चाहा कि सचमच हम दोनों कभी दोस्त थे। उसके जैसा प्रसन्न आदमी मैंने और कभी नहीं देखा।

काफी देर तक मेरी पीठ थपथपा-थपथपाकर वह मुझे सांत्वना देता रहा और उस दुष्ट को कोसता रहा जिसने मेरी टांग तोड़ दी थी।

दोपहर के बाद एक हल्की गाड़ी में जोतकर मुझे दरवाज़े पर लाया गया। कुमारी एलेन मेरी ट्रायल लेने जा रही थी और जो उसके साथ था। जल्दी ही मुझे पता चल गया कि वह एक अच्छी सवार है। मेरी चाल से वह भी काफी खुश लग रही थी। जो कुमारी एलेन को मेरे बारे में पिछली बातें बता रहा था और लग रहा था कि उसे इस बात का पक्का विश्वास है कि स्क्वायर वार्डन का ब्लैक ब्यूटी नाम वाला घोड़ा मैं ही हूं।

लौटने के बाद मैंने सुना कि कुमारी एलेन अपनी अन्य बहनों को मेरे वर्ताव के बारे में, और जो से सुनी मेरी कहानी बता रही थी। उसने कहा, "निश्चित ही श्रीमती गार्डन को

पत्र लिखकर मैं यह बताऊंगी कि उनका प्यारा घोड़ा अब मेरे पास आ गया है। यह जानकर वह कितनी खुश होंगी।"

इसके बाद एक हफ्ते तक रोज़ मुझे गाड़ी में जोता जाता रहा और जब मेरी ओर से किसी बात का डर नहीं रहा तो अन्त में कुमारी लेविना की सवारी के काम में आया। और फिर उस घर में मेरा रहना तथा उसी पुराने और प्यारे 'ब्लैक ब्यूटी' नाम से पुकारा जाना पूरी तरह निश्चित हो गया।

इस आरामदेह जगह में रहते-रहते अब मुझे एक साल हो गया है। जगन एक अच्छा और दयालु सईस है। मेरा काम आसान और मनपसन्द है और अब मैं अपने अन्दर पहले से कई गुना अधिक ताकत और उत्साह अनुभव कर रहा हूं। एक दिन मेरे पिछले किसान मालिक मिस्टर थारोगुड ने जो से कहा—"तुम्हारे यहाँ यह कम से कम बीस वर्ष तो जीवित रहेगा ही।"

कभी-कभी मेरे मौजूदा मालिक का लड़का विली भी मुझसे बातें करता है। यही नहीं, वह मेरे साथ अपने खास दोस्तों जैसा बर्ताव करता है। इन लोगों ने इस बात का भी पक्का वादा किया है कि अब वे मुझे कभी भी नहीं बेचेंगे। इसीलिए अब मुझे किसी बात का डर नहीं है। मेरे सारे दुःखों का अन्त हो गया है, मैं अब अपने घर में आ गया हूं और बहुधा कल्पना करता हूं कि मैं अभी भी बर्टविक के उसी पुराने बगीचे में सेब के वृक्षों के नीचे अपने पुराने दोस्तों के साथ खड़ा हूं।

० ० ०

मुद्रक : के० के० प्रिंटर्स, दिल्ली

22879

किशोरों के लिए साहित्य

ये पुस्तकें विश्वविख्यात उपन्यासों एवं कहानियों के किशोरोपयोगी संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर हैं। इनकी भाषा अत्यन्त सरल और शैली बड़ी रोचक है। बालक बड़े चाव से इन पुस्तकों को पढ़ेंगे।

गुलिवर की यात्राए (Gulliver's Travels)
राबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe)
खज़ाने की खोज में (Treasure Island)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार खां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
काला फूल (Black Tulip)
कैदी की करामात (The Count of Monte Cristo)
डेविड कापरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ की रानी (Andersen's Fairy Tales)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबीडिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्रा (20 Thousand Leagues Under the Sea)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
काला घोड़ा (Black Beauty)
साहसी राबिन्सन (Swiss Family Robinson)

शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली